संस्मरण

अतीत के पन्नों से

पिता स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
के संघर्षमय जीवन का रेखांकन
द्वारा

डा. मृदुल श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

संस्मरण

अतीत के पन्नों से

पिता स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के
संघर्षमय जीवन का रेखांकन
द्वारा

डा. मृदुल श्रीवास्तव

स्व. श्री नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव फाउण्डेशन के
तत्वावधान में प्रकाशित

श्रीवास्तव परिवार के सदस्यगण

मेरी पूज्य माँ श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव
को समर्पित

प्रकाशक
स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव फाउडेशन
568/9, कैलाशपुरी, आलमबाग
निकट नीलकंठ मन्दिर
लखनऊ–226 005

संस्करण
2011

सर्वाधिकार सुरक्षित
लेखक
डा. मृदुल श्रीवास्तव

मुद्रक
आर्मी प्रिंटिंग प्रेस, सदर कैण्ट, लखनऊ

अनुक्रमणिका

1.	प्राक्कथन	00
2.	वेद एवं पुराणों में पिता का महत्व	00
3.	जीवन परिचय	00
4.	परम मित्र स्व. अश्विनी भार्गव के संस्मरण	00
5.	परिवारिक वृक्ष	00
6.	कैरियर यात्रा	00
7.	स्व. एन.के. श्रीवास्तव फाउण्डेशन के उद्‌देश्य एवं नियमावली	00
8.	भविष्य की योजनाएं	00

Administrative Training Institute, U.P. Nainital
First Refresher Course of Section Officers of the U.P. Secretariat

August 20, 1977

Sitting (Left to Right) : Sarvsri D.P. Varshney, dy. Director (Law),J.C. Saxena, Jt. Director (Accounts), S.C. Pant, Jt. Director (Revenue), Gyanendra Bahadur, Dy. Director (Revenue), N.S. Mathur, Director, J.K.Dikshit, Section Officer, D.S. Rawat, Jt. Director (Adm.), U.K.Varma, Jt. Director (Law), A.H. Chisti, Jt. Director (Sales Tax), H.C. Joshi, Assistant Director (Law),
Standing : Sarvsri R.K. Rastogi, S.O., N.K. Srivastava, S.O., A.K. Srivastava, S.O., R.S. Srivastava,S.O., Nirmal Chandra, S.O., P.N. Sukul, S.O., Ram Niwas, S.O., G.N. Wanchoo, S.O., K.K. Pant, Assistant Director (Adm.), L.S. Gautam, S.O., S.K. Vama, S.O.

Photo : Ratan Lall Sah, Naiai Tal

प्राक्कथन

यद्यपि यह पुस्तक लिखना मेरे जीवन का सबसे कठिन कार्य था क्योंकि जब आप अपने पिता को आदर्श मानते हैं और उनके संघर्षों एवं जीवनमूल्यों को रेखांकित करना चाहते हैं तो आपको उनके उन लम्हों को याद करके उनके कष्टों एवं संघर्ष कों महसूस करते हैं और लगता है कि यदि मैं उस जगह पर होता तो शायद जीवन से हार मान गया होता। जब भी पापा जी मुझे अपने अतीत और अपने माता–पिता के बारे में बताते थे तो उनकी आँखें हमेशा अश्रुपूरित हो जाती थीं और आज मुझे एक–एक बात याद करते हुए मेरी आंखें नम हो गई। मुझे अपनी इस गलती को मानने में आज तनिक भी हिचक नहीं है कि हमने हमेशा उनसे उम्मीदें ही की और कभी उनकी मजबूरियों को नहीं समझा। वह मुझसे हमेशा ही कहते थे कि मैं तुम सबके लिए जीवन भर के लिए रोटी, कपड़ा और मकान का इंतजाम करके जाऊँगा क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरा परिवार उन मुसीबतों से जूझे जिन परेशानियों को मैंने जीवन भर झेला है।

साल 2009 मेरे जीवन का सबसे कठिन साल रहा इसी साल मैंने अपने पूज्य शिक्षक प्रोफेसर एस.पी. श्रीवास्तव और अपने पिता श्री नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव को खोया। दोनों ही लोग मेरे लिए पिता और गुरू दोनों ही थे। आज भी बहुत से लोग यही समझते हैं कि मैं एस.पी. श्रीवास्तव का पुत्र हूँ और मैंने भी हमेशा इस विश्वास को बनाये रखने का प्रयास किया। मेरे पिता और गुरू दोनों ने ही अपने प्राण मेरी मौजूदगी में ही त्यागे और उस पल मुझे एहसास हो रहा था कि मेरे जीवन में यदि प्रोफेसर बलराज चौहान न होते, उनका आर्शीवाद, उनका विश्वास और मुझे लखनऊ वापस लाने का उनका प्रयास न होता तो मैं कभी भी अपने गुरू स्व. एस.पी. श्रीवास्तव और अपने पिता स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की उनके जीवन के अन्तिम क्षणों में सेवा नहीं कर पाता। मैं और मेरा परिवार आजीवन बलराज सर के आभारी रहेंगे।

मृत्यु एक शाश्वत सत्य है और मनुष्य जीवन नश्वर है यह सभी जानते हैं, पर कुछ ही लोग उसको सार्थक रूप देने में सफल हो पाते है। पैसा और ओहदा इंसान को बड़ा नहीं बनाता बल्कि उसके कर्म उसको बड़ा बनाते है। सभी के जीवन मे बहुत सी परेशानियाँ होती हैं और बहुत से निर्णय ऐसे हो सकते है जिन्हें समाज स्वीकार न करता हो या कैसे जीवन जीना चाहिए ? इस क्लिष्ठ प्रश्न का उत्तर मुझे पिता जी स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने अपने लिखे हुए अंतिम लिखित प्रतिलिपि में दिया जिसमें उन्होंने कहा है कि मनुष्य को स्वतन्त्र, आत्मनिर्भर, कर्त्तव्यनिष्ठ सम्मान से जीने वाला होना चाहिए। जहाँ सम्मान नहीं, आदर नहीं उधर मुड़कर भी नहीं देखना चाहिए चाहे वह निकट का अर्थात् पत्नी, पुत्र, बेटी अथवा और कोई निकटस्थ ही क्यों न हो।

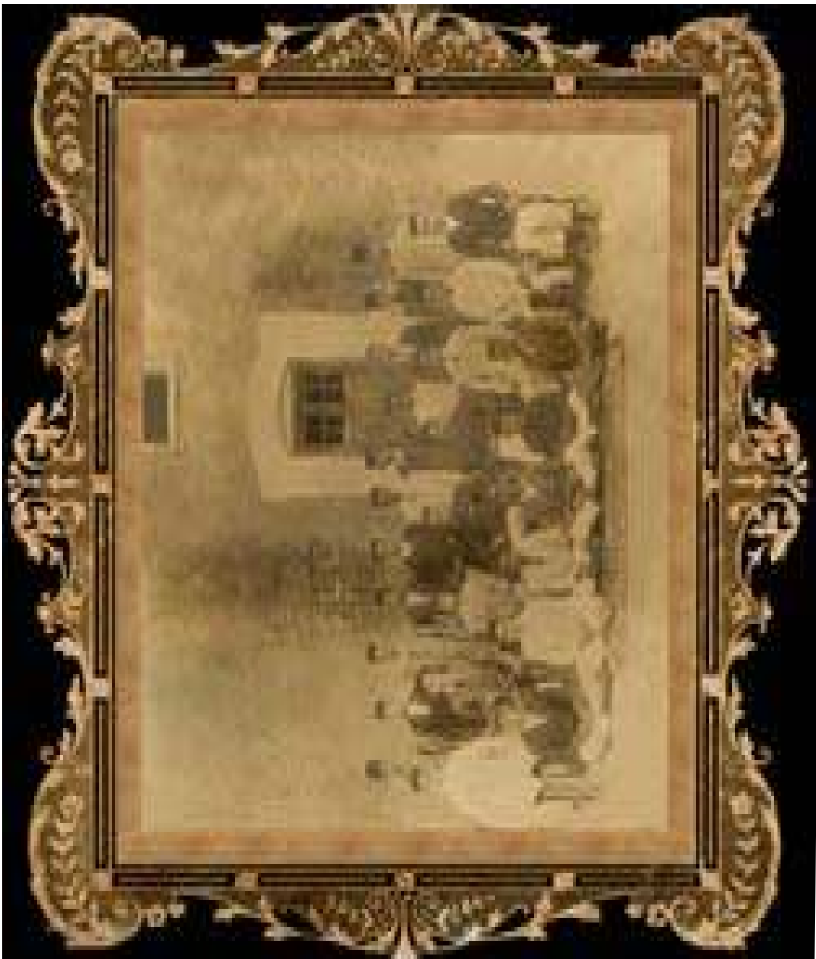

परिवार का एक चित्र (1924)

इस प्रश्न का उत्तर मेरे गुरू स्व. श्री एस.पी. श्रीवास्तव ने अपने जीवन के आखिरी दिन में यह दिया था कि "बेटा तुम सिर्फ अपनी आत्मा की आवाज़ की सुनना। बहुत से निर्णय, बातें सामाजिक मूल्यों के अनुसार नहीं होती परन्तु हमेशा अपनी आत्मा की आवाज़ सुनकर ही निर्णय लेना और यदि तुमने ऐसा किया तो ईश्वर आपको रास्ते और हिम्मत अपने आप प्रदान करेगा।

जब ये मैंने ये बातें अपने जीवन में आत्मसात् करने का प्रयास किया है मुझे लगता है कि हर पल दोनों की आत्मा और दैवी शक्ति मुझे हिम्मत देती है और आगे का मार्ग दिखाती हैं। जिस तरह से बलराज सर ने मुझे एक गुरू, अभिभावक और प्रेरणास्रोत के रूप में हिम्मत दी है तब से मैंने हर पल ईश्वर से यही प्रार्थना की है कि भगवान मुझे इतना आर्शीवाद एवं रास्ता दिखायें कि मैं इस जीवन में कुछ ऐसा करने में सक्षम हो सकूँ कि इन सभी के अच्छे कार्यों और जीवन मूल्यों को जीवन पर्यन्त आगे बढ़ा सकूँ और जिससे आने वाली पीढ़ियाँ भी इन सभी के विचारों एवं संघर्षों से लाभान्वित हो सकें।

मैं अपने सभी रिश्तेदारों, गुरूजनों एवं मित्रों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे यह किताब लिखने की प्रेरणा दी। मेरा यह छोटा सा प्रण मेरे कुछ रिश्तेदारों एवं गुरूजनों श्रीमती कविता रश्मि, श्री अजय, श्री मिथिलेश मिश्रा, श्री मधुकर विश्वकर्मा, श्रीमती कल्पना दीक्षित, सुश्री कोमल दीक्षित, सुश्री अनिता सिंह, श्रीमती राधा सिंह, सुश्री वर्षा, सुश्री हर्ष, श्री मनु एवं मान, सुश्री आद्या श्रीवास्तव, श्री जे.पी. श्रीवास्तव, श्री अविनाश चन्द्रा, श्री शरद शर्मा, श्री राजेश साहनी, श्री विजय कुमार यादव, श्रीमती मिथिलेश श्रीवास्तव, श्री सुरेश श्रीवास्तव, सुश्री शशि, श्रीमती विजय लक्ष्मी पाण्डेय, श्री सुरेश श्रीवास्तव, श्री मुकेश श्रीवास्तव, श्री प्रभात श्रीवास्तव, श्रीमती ममता श्रीवास्तव, श्रीमती नमिता श्रीवास्तव, श्री अजीत कुमार साहू, श्री जवाहर लाल, श्री अश्विनी भार्गव, सुश्री अंजुला राजवंशी, श्री संदीप गुप्ता, श्री अमित गुप्ता, डा. ए.पी. सिहं, प्रो. बलराज चौहान, प्रो. ए.एन. सिंह, प्रो. कुमकुम किशोर की वजह से पूर्ण हो पाया है, मैं उन सभी का आभारी हूँ। मै अपने परम मित्र डा0 के.ए. पाण्डेय का आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इस किताब को Edit करने में सहायता दी। मैं श्री गौतम बजाज, श्री आर.के. सिंह एवं श्री जावेद अहमद का तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ जिनके अथक प्रयासों एवं सहयोग से मेरा यह सपना पूर्ण हो सका है।

आशा करता हूँ कि मेरा यह छोटा सा प्रयास सभी को पसन्द आयेगा और मेरी त्रुटियों को एक नादान लेखक समझकर माफ करेंगे। यदि भूलवश उनसे जुड़े किसी का भी नाम मुझसे छूट गया हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

(डा. मृदुल श्रीवास्तव)

परबाबा देवीदयाल अपने अन्तिम क्षणों में परदादी के साथ

पितृ सेवा

(पं0 श्री वेणीराम जी शर्मा गौड़, वेदाचार्य, काव्यतीर्थ)

रक्षणार्थक 'पा' धातु के आगे 'नप्तृनेष्टृत्वष्टृहोतृ0' इत्यादि औणादिक सूत्र से 'तृच्' प्रत्यय लगाने तथा आकार को 'इत्व' का निपातन करने 'पितृ' शब्द की निष्पत्ति होती है। अनन्तर 'पितृ' शब्द से प्रातिपदिक संज्ञा करने पर 'सु' विभक्ति आती है, पश्चात् 'अनङ्.' और 'दीर्घ' करने पर 'पिता' रूप बनता है।

अब 'पिता' शब्द के निर्वचन–सम्बन्धी कुछ वचनों[1] का भावार्थ दिया जा रहा है–

'जो धर्म की शिक्षा देता हुआ अधर्म से निवृत्त करे, जो विद्या पढ़ाये तथा लोकव्यवहार में कुशल बनाये, जो सुख–साधनों को उपस्थित करे तथा पुत्र की गलती से किये हुए अपराधों को क्षमा करे, जो अपनी पैदा की हुई समस्त सम्पत्ति पुत्र को दे, जो अपने पुत्र द्वारा दी हुई जलांजलि को ग्रहण करे, जो उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिये अपनी धर्मपत्नी से समागम करे, जो अपनी सन्तान की रक्षा के लिये भगवान् से प्रार्थना करे, जो अच्छे कार्यों में प्रेरित करे, जो पुत्र द्वारा की गयी सेवा को स्वीकार करे, जो पतन के गर्त में गिराने वाले समस्त लोकविरूद्ध अवगुणों का पान कर अपने पुत्र से अनुराग (प्रेम) करे, जो दोषों से तथा शत्रुओं से बचाये, जो नौकर–चाकर आदि के द्वारा पुत्र की रक्षा का प्रबन्ध करे, उसे 'पिता' कहते हैं।'

पुराणों के आचार्य श्रीव्यासजी ने ब्रह्मवैवर्तपुराण में क्रमशः सात और पाँच प्रकार के 'पिता' का उल्लेख किया है–

कन्यादातान्नदाता च ज्ञानदाताभयप्रदः।

जन्मदो मन्त्रदो ज्येष्ठभ्राता च पितरः स्मृतः।।[2]

(कृष्णजन्मखण्ड 35 |57)

---

1. (1) पाति धर्मान् बोधयति–शिक्षयति चाधर्मान्निवर्तयति पुत्रमिति पिता। (2) पाति पाठयति विद्यां व्यञ्जयति लौकिकव्यवहारानिति पिता। (3) पाति क्षमतेऽपत्यकृतानपराधानकलय्यसुखसाधना नीतिपिता। (4) पाति ददाति स्वोपार्जितधनधान्यादीति यः स पिता। (5) पाति गृहणति सदपत्यप्रत्तजलाञ्जल्यादिकमिति पिता। (6) पाति गच्छति सदपत्योत्पादनाय स्वदारानिति पिता। (7) पाति प्रार्थयते भगवन्त। स्वापत्यरक्षणाय यः स पिता। (8) पाति प्रयोजयति सत्कार्येषु यः स पिता। (9) पाति लभतेऽपत्यकृतां शुश्रूषामिति पिता। (10) पाति पिबति सकलावगुणरसान् पतनकारिणी लोकविद्विष्टान् स्वपत्यकृतान् यः स पिता। (11) पाति रक्षति दोषेभ्यः शत्रुभ्यो वेति पिता। (12) पाति रक्षयतीति पिता।

2. कन्या देने वाला (श्वशुर), भरण–पोषण करने वाला, ज्ञान देने वाला, आपत्ति से उबारने वाला, जन्म देने वाला, मन्त्र देने वाला और बड़ा भाई–ये सात प्रकार के पिता शास्त्रों में कहे गये हैं।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

अन्नदाता भयत्राता पत्नीतातस्तथैव च।

विद्यादाता जन्मदाता पञ्चैते पितरो नृणाम्।।

(ब्रह्मखण्ड 10। 153)

उशनः संहिता में सात प्रकार के पिता बतलाये गये हैं।

चाणक्य नीति में पाँच प्रकार के 'पिता' का उल्लेख मिलता है। यथा –

जनिता चोपनेता च यस्तं विद्यां प्रयच्छति।

अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृताः।।[3]

(5।22)

उपर्युक्त पिताओं में शास्त्रज्ञों ने जन्म देने वाले पिता को ही सबसे श्रेष्ठ और पूज्य बतलाया है। धर्मशास्त्रादि सद्ग्रन्थों का सिद्धान्त तो यह है कि–

'सर्वेषामापि पितृणां जन्मदाता परो मतः।'

'दुर्लभो मानुषो देहः' के अनुसार मानव–देह अत्यन्त दुर्लभ है, उस अप्राप्य शरीर को प्रदान करने का समस्त श्रेय केवल 'पिता' को ही है। पिता के ही कृपा–कटाक्ष से प्राणी मानव–शरीर द्वारा संसार में अवतीर्ण होकर कल्याण–साधन के योग्य बनता है। अतः संसार में पिता से बढ़कर पुत्र के लिये और कोई मान्य नहीं है। जैसा कि ब्रह्मवैवर्त पुराण के गणपति खण्ड में स्पष्ट कहा है–

मान्यः पूज्यश्च सर्वेभ्यः सर्वेषां जनको भवेत्।

अहो यस्य प्रसादेन सर्वान् पश्यति मानवः।।

जनको जन्मदानाच्च रक्षणाच्च पिता नृणाम्।

ततो विस्तारकरणात् कलया स प्रजापतिः।।

(44।59–60)

जिस पिता के प्रसाद से मनुष्य इहलोक तथा परलोक के समस्त सुखों का भाजन बन जाता है, वह सर्वथा सबका पूजनीय होता है। जन्म देने से पिता की 'जनक' संज्ञा, रक्षा करने से 'पिता' संज्ञा तथा सृष्टि का विस्तार करने के कारण एक आंश से 'प्रजापजति' संज्ञा होती है।

---

3. जन्मदाता, गायत्री का उपदेश देने वाला, विद्या पढ़ाने वाला, भरण–पोषण करने वाला और विपत्ति से रक्षा करने वाला–ये पाँच प्रकार के पिता शास्त्रों में कहे गये हैं।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की बुआ, फूफा जी, चचेरी बहने निर्मल एवं विनोद

इस संसार में बन्धु–बान्धव, मित्र आदि जितने भी लोग हैं, वे अपने से अधिक अन्य किसी मनुष्य को उन्नतिशाली देखना–सुनना नहीं चाहते; किंतु इस स्वाभाविक इच्छा का अभाव सिर्फ एक 'पिता' कहलाने वाले व्यत्ति विशेष में ही पाया जाता है, जो सर्वदा अपने पुत्र को अपने से सर्वतोभावेन उन्नत देखना चाहता है। इसीलिये 'पुत्रादिच्छेत् पराजयम्' कहा गया है। प्रत्येक पिता अपनी–अपनी सन्तान के लिये अनेक प्रकार के कष्ट सहन करता है, पद–पद पर लोगों की जी–हुजुरी करता है, अर्थात् अपने पुत्र को सुयोग्य बनाने के लिये यथाशक्ति मानवसाध्य कोई बात उठा नहीं रखता है। अधिक क्या, वह अपने पुत्र के सुख–दुःख में ही अपना सुख–दुःख समझता है। अतः निष्कर्ष यह निकला कि पुत्र के लिये अहैतुक कल्याण चाहने वाला पिता से बढ़कर और कोई नहीं है। अतः पुत्र अपने पिता से जन्म–जन्मान्तर में भी कदापि उत्रऋण नहीं हो सकता अर्थात् पुत्र द्वारा पिता के उपकारों का बदला कभी नहीं चुकाया जा सकता। यदि कुछ हो सकता है तो इतना ही कि वह अपने पिता की श्रद्धा–भक्तिपूर्वक जीवनपर्यन्त सेवा–शुश्रूष करता रहे। पितृसेवा का महत्व पद्मपुराण के भूमिखण्ड (63 ।13)– में इस प्रकार लिखा है –

मखानामेव सर्वेषां यत् फलं प्राप्यते बुधैः।

तत् फलं प्राप्यते पुत्रैः पितृः शुश्रूषणादपि।।[4]

और भी–

देवास्तस्यापि तुष्यन्ति ऋषयः पुण्यवत्सलाः।

त्रयो लोकाश्च तुष्यन्ति पितृः शुश्रूष्णादिह।।[5]

(पद्मपु0 भूमिख0 62 ।73)

पुत्र के लिये पिता सर्वस्व है। अर्थात् वही धर्म, कर्म, स्वर्ग, तीर्थ, जप, तप, पूजा–पाठ आदि है; उससे बढ़कर और कोई देवता नहीं है। लिखा भी है –

पिता धर्मः पिता स्वर्गः पित हि परमं तपः।

पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवतः।।

और भी –

नास्ति तातसमो देवो नास्ति तातसमो गुरुः।

नास्ति तातसमो बन्धुर्नास्ति तातसमः क्वचित्।।

---

4. विज्ञ लोगों को सब प्रकार के यज्ञों का जो भी फल प्राप्त होता है, वही फल पुत्रों को पिता की सेवा से मिल जाता है।

5. पिता की सेवा से देवता, ऋषि तथा तीनों लोगों की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

बचपन में नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव (मध्य) अपने पिता (बायें) और दादी के साथ

तथा अन्यान्य धर्मग्रन्थों में –

नास्ति पितृसमो गुरुः। (उशनः संहिता 1 ।35)

न च मित्रं पितुः परम्। (ब्र0वै0 ब्रह्मखण्ड 11 ।19)

मातापित्रोः परं तीर्थम्। (व्याससंहिता 4 ।12)

पिता देवो जनार्दनः। (चाणक्यनीति 10 ।14)

पितृदेवो भव। (तैत्ति0 उव0 1 ।11 ।2)

जिस पिता ने जन्म प्रदान कर हमें मनुष्य बनाया, जिसने सत्–शिक्षा देकर लोकव्यवहार में कुशल बनाया, जिसने तन–मन–धन से लालन–पालन किया, जिसने सुयोग्य बनाने के लिये यथाशक्ति कोई कर्तव्य नहीं छोड़ा, आज हम उसकी अहैतुकी कृपा के बल से सुयोग्य बन जाने पर उसके उपकारों को भूल बैठे, उससे विद्वेष करने लग गये, उससे बोलने–चालने तक का नाता तोड़ चुके– इससे बढ़कर हमारे लिये दुःख और शोक की बात क्या होगी।

जिस समय इस पवित्र भारत भूमि में पितृभक्त बालक विराजमान थे, उस समय यह देश सब प्रकार के सुख–वैभव से समृद्ध था और समस्त प्राणी सुख–शान्ति से जीवन–यापन करते थे। अब भी पितृभक्ति एवं पितृसेवा के प्रभाव से भावी सन्तान सदाचारी और पितृभक्त हो सकती है। पितृभक्त बालकों से देश का सदा कल्याण होता रहा है और होता रहेगा।

प्राचीन इतिहासों को देखिये–भगवान् रामचन्द्र, पितामह भीष्म और वीरवर परशुराम–जैसे अनेक पितृभक्त पुत्र उत्पन्न हो चुके हैं, जिनकी अटल कीर्ति आज भी अजर–अमर है। इसी प्रकार अनेक ऋषि–मुनि, राजा–महराजाओं की पितृभक्ति प्रसिद्ध है, जिससे हमें भी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

आज भी ऐसे अनेक पितृभक्त विद्यमान हैं, जो पितृसेवा द्वारा आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक उन्नति प्राप्त कर रहे हैं। अतएव हमें भी अपने परमाराध्य पितृदेव की सेवा द्वारा अपने सर्वविध कल्याण का साधन सुगम करना चाहिये।

'कल्याण' पुस्तक से आभार सहित

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव नातिन अक्षिता एवं भाव्या के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पोते अनिकेत एवं नातिन भाव्या के साथ

स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव : जीवन परिचय

31.0.1937—03.10.2009

मैं अपने पिता स्व. श्री नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के जीवन परिचय की शुरूआत उन्हीं के लिखे अन्तिम वाक्यों से करना चाहूँगा:—

> “अब जीवन के 73वें वर्ष में मुझे यह सोचने के लिए विवश होना पड़ रहा है कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या था ? तो पाता हूँ कि मैं बचपन से ही स्वतन्त्र, आत्मनिर्भर, कर्त्तव्यनिष्ठ और सम्मान के साथ ही जीने का आदी रहा हूँ। बाद में यही मेरा स्वभाव बन गया। जहाँ सम्मान नहीं, आदर नहीं ऊधर मैं मुड़कर भी नहीं देखता। चाहे वह मेरा कोई निकट का अर्थात् पत्नी, पुत्र, बेटी और कोई निकटस्थ ही क्यों न हो।”
>
> नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
>
> 12.08.2008

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पोते अनिकेत एवं नातिन भाव्या के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव का जन्म 5 जुलाई 1937 को उत्तर प्रदेश राज्य के जिला फतेहपुर, तहसील बिन्दकी, ग्राम चूड़ामनखेड़ा में हुआ था। पिता का नाम स्व. त्रिभुवन नाथ श्रीवास्तव था तथा माता का नाम देवकी था। उनके बचपन में पुकारने का नाम रामू था।

जन्म के 6 माह पश्चात् ही उनकी माता का देहान्त हो गया था। यह परिवार ब्रिटिश सरकार के समय से ही काफी प्रभुत्व वाला तथा पढ़ा–लिखा था। नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव जी के परबाबा श्री चूड़ामन के नाम पर ही गाँव का नाम चूड़ामन खेड़ा पड़ा। उस समय परबाबा की पीढ़ी में सभी भाईयों के पास 100 बीघा जमीन थी। परिवार की परम्परा के अनुसार जब भी परिवार में कोई भाई बड़ा होता था तो सभी भाई मिलकर उसको 100 बीघा जमीन खरीदकर दे देते थे। यह परम्परा लम्बे समय तक चली।

श्रीवास्तव परिवार ब्रिटिश साम्राज्य के समय काफी संभ्रान्त परिवारों में गिना जाता था। बाबू त्रिभुवन नाथ अपने परिवार के साथ इलाहाबाद में आ गये और कलेक्ट्रेट में नौकरी करने लगे। उन्होंने कोठा पार्चा, इलाहाबाद में एक मकान किराये पर लिया और वहीं से मेरे पिता नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के जीवन का संघर्ष शुरू हुआ। बाबा त्रिभुवन नाथ दिनभर कलेक्ट्रेट में नौकरी करते थे तथा शाम को एक प्राइवेट नौकरी भी करते थे। शुरू से ही पिता एवं पुत्र का संवाद बहुत कम था।

बचपन से ही नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर थे। माता के बचपन में ही देहान्त ने उन्हें संघर्ष करने की क्षमता दे दी।

उनके पिता त्रिभुवन नाथ जी ने अपनी पत्नी के स्वर्गवास के बाद दूसरा विवाह किया तथा उनसे उन्हें दो पुत्र एवं तीन पुत्रियों की प्राप्ति हुई। उनके पुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव (भइया जी), श्री सुरेश कुमार श्रीवास्तव (भइया जी), पुत्रियाँ प्रेमा श्रीवास्तव, कुसुम श्रीवास्तव एवं मिथिलेश श्रीवास्तव थे। सम्पूर्ण परिवार होते हुए भी उन्हें हमेशा से ही पारिवारिक सुख का अभाव रहा। बचपन के दिनों से ही उन्होंने बहुत संघर्ष किया। वो 5–5 किमी से सर पर चूल्हे में जलाने वाली लकड़ी लाते थे। इण्टर में आकर उन्होंने अपने लिए पहला पैंट बनवाया था। वह कक्षा–8 से ही बच्चों को घर–घर जाकर ट्यूशन पढ़ाते थे तथा उसी से अपना खर्च चलाते थे। उनके परम मित्रों में श्री अश्विनी कुमार भार्गव थे। बचपन से ही मुसुदद्रीन के होटल में खाना खाते थे और प्रत्येक मंगलवार की रामबाग इलाहाबाद के हनुमान मंदिर में जाना उनका नियम था। बाबा त्रिभुवन नाथ जी समयाभाव के कारण कभी बातचीत के लिए साथ नहीं बैठ पाते थे और कभी–कभी पिता–पुत्र को मिलने में ही एक–एक सप्ताह तक का समय लग जाता था। घर में पढ़ने का माहौल न होने के कारण उन्होंने छत पर दो तरफ से घेर कर एक बक्सा रखकर उन्होंने अपना बसेरा बनाया। कमरे की एक दीवार में हमेशा से ही हवा के लिए जो छेद बनाये जाते थे तथा दो तरफ से कच्ची दीवार के कमरे में बचपन से ही उन्होंने गर्मी, जाड़ा, बरसात सभी मौसम में उसी को अपनी तपोभूमि मानकर तपस्या की। कभी–कभी जब अपने जीवन के संघर्ष

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव नातिन भाव्या के साथ

की कहानी मुझे बताते थे तो उनकी आँखे नम हो जाती थी। उन्होंने कोई भी पल शायद ऐसा नहीं बिताया होगा जिसमें उन्होंने अपनी पहली माँ तथा पिता को याद किया हो। उनको बचपन में सहारा देने में उनके मामा का तथा उनकी बिन्देश्वरी बुआ का बहुत बड़ा हाथ था।

उन्होंने 1952 में हाईस्कूल तथा 1954 में इण्टरमीडिएट की परीक्षा इलाहाबाद के CAV (City AV College) से उत्तीर्ण की। बचपन से ही उनकी इच्छा एक इन्जीनियर बनने की थी तथा इलाहाबाद में स्थित मोतीलाल नेहरू रीजनल कालेज इन्जीनियरिंग से करने की थी परन्तु दुर्भाग्यवश पिता की अर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण कलेक्ट्रेट में ही क्लर्क की नौकरी करनी पड़ी। वो बताते थे कि लगभग 4–5 वर्षों तक नौकरी तो वो करते थे परन्तु उन्होंने वेतन कभी नहीं लिया क्योंकि पूरा वेतन उनके पिता त्रिभुवन नाथ ले आते थे जिससे घर का खर्च चलता था। अपने स्वयं के खर्च के लिए भी उन्हें अपनी ट्यूशन का ही सहारा था। इसी घर की जिम्मेदारियों के कारण वो सायं की स्नातक परीक्षा का द्वितीय वर्ष नहीं पूर्ण कर पाये और जो उन्होंने लगभग 6 वर्ष के अन्तराल के बाद स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। वो कभी–कभी बताते थे तो उनकी Class में एक English Teachers का लड़का था और वो कितना भी अच्छा क्यों न लिखे Highest Marks उसी के आते थे।

नौकरी के दौरान उन्हें गलत ढ़ंग से पैसा कमाने के अनगिनत मौके मिले परन्तु उन्होंने अपनी ईमानदारी नहीं छोड़ी बल्कि उनका यह हमेशा से कहना था कि नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव बिकाऊ नहीं है और और कोई भी उसकी कीमत नहीं लगा सकता।

वह PCS की परीक्षा की तैयारी करते थे और सफलता की शत प्रतिशत सम्भावना थी परन्तु घर की जिम्मेदारियों के कारण ठीक से पढ़ नहीं पाये और उनका यह सपना भी अधूरा रह गया। वह अपनी लगन एवं परिश्रम के बल पर आगे बढ़ते रहे। उन्होंने लोक फंड आडिट का कम्पटीशन पास किया था। बतौर आडिटर वो हरदोई, सण्डीला एवं लखनऊ में लगभग 3–3 महीने के अन्तराल के लिए रहे। चाक से छत की फर्श पर लिखकर पढ़ते हुए उन्होंने जिन्दगी के मुकाम को प्राप्त किया। उन्होंने सचिवालय सेवा की परीक्षा Senior Secretriat Services का Exam Pass किया। इसी के बाद वो लखनऊ में settle हो गये और 1964 में लखनऊ आने के बाद वो Model House, Aminabad में किराये पर रहे। अच्छा खाना, अच्छा पहनना तथा घूमना उनको अच्छा लगता था। शायद उनकी शुरू की अभागों वाली ज़िन्दगी ने उन्हें मौका दिया था अपनी छोटी–छोटी इच्छाओं को पूरा करने का।

बचपन से ही क्रिकेट खेलने में उनकी अत्यधिक रूचि थी। पास के ईदगाह के मैदान में खेलने के लिए भाग जाते थें वो एक स्थानीय Local Club में Cricket Club के All Rounder Player भी थे। कोठा पार्चा के पास में एक मित्रा Family रहती थी जो Maths के शिक्षक थे तथा उनकी पुत्री रेनू मित्रा से उन्हें विशेष लगाव था। उनकी माँ भी उनका बड़ा ख्याल रखती थी। शायद यही कारण रहा होगा कि उनकी

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के बचपन के मित्र

स्व. दिनेश श्रीवास्तव

स्व. मुरारी मोहन राय

श्री प्रबल कुमार मजूमदार

श्री अश्विनी कुमार भार्गव

बंगाली में बहुत अच्छी पकड़ थी। इसी तरह लखनऊ में घोष जी जो पेशे से डाक्टर थे उन्हें वो पिता समान आदर देते थे।

पढ़ने के लिए वो अक्सर अल्फ्रेड पार्क जहाँ क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद ने अपने को गोली मारी थी और संगम, इलाहाबाद में पढ़ने जाते थे। माँ की बचपन में ही मृत्यु के बाद मथुरा बाबा ने चूड़ामन खेड़ा, बिन्दकी में 2–3 साल तक पालन पोषण किया। जब वो 4 साल के हो गये तो उनके पिता त्रिभुवन नाथ उनको अपने साथ इलाहाबाद ले आये।

बचपन में एक बार उनको बहुत तेज बुखार चढ़ा हुआ था तो उन्होंने अपने पिता त्रिभुवन नाथ जी से पूछा कि मैं अपका कौन हूँ और आपको कोई फर्क पड़ता है कि मै जीवित रहूँ कि मर जाऊँ। जब वो टयूशन पढ़ाते थे तो उन्हें लगभग 20–30 रूपये महीने की आमदनी हो जाती थी जिससे वो अपने खाने एवं पढ़ाई का खर्च चलाते थे।

जब उनके पिता त्रिभुवन नाथ ने कटघर में अपना मकान बनवाया तब घर की आर्थिक स्थिति खराब हो गई। जब तक उन्होंने कलेक्ट्रैट में नौकरी की तब तक अपनी तनख्वाह घर में ही दी। पंड़ितों ने तो उनके बारे में यह भविष्यवाणी की थी कि बड़ा ही अभागा लड़का है और जिन्दगी भर दूसरों पर आश्रित रहेगा जिसको उन्होंने अपनी मेहनत एवं लगन से झूठा साबित किया और Self Made Person की तरह सारी जिन्दगी खुद आश्रित न होकर दूसरों को ही सहारा दिया। अपनी हाथों की लकीरों को स्वयं बदलने की कहावत को चरितार्थ किया। नरायन आटोमोबाइल्स के महाप्रबन्धक रस्तोगी जी एवं UPSRTC के Chief Engineer राजकुमार मित्तल उनके अभिन्न मित्र थे।

लखनऊ में नौकरी लगने के पश्चात् उन्होंने अपने पिता त्रिभुवन नाथ से कहा आप लखनऊ आ जाइये और यहीं कोई Business कर लीजिएगा पर वो नहीं आये और सेवानिवृत्ति के कुछ समय पहले कर्ज लेकर चाका, इलाहाबाद में साढ़े छः बिसवाँ जमीन लेकर चूना भट्‌टी की फैक्ट्री डाल दी। परन्तु वह चल ना सकी और घर का सारा पैसा कर्ज चुकाने में चला गया। उनके पिता ने 3 लड़कियों की शादी के लिए कुछ भी इकट्‌ठा नहीं किया था। तीनों बहनों प्रेमा, कुसुम एवं मिथिलेश में से कुसुम उनका थोड़ा ख्याल रखती थी। कहते हैं इतिहास पुनरावृत्ति करता है। उनके पिता ने उनके आमंत्रण पर लखनऊ में Settle होने से मना कर दिया था और जब सन् 2008 में मैने पापा से पूछा कि आप इतने बीमार रहते हैं अब आप सब मेरे साथ भोपाल चलिये जहाँ मेरी नौकरी है परन्तु उनका जवाब था कि "बाप कहीं नहीं जाता तुम्हें आना हो तो तुम आ जाओ", उनकी इस बात ने मेरी अर्न्तआत्मा को झकझोर दिया और मैनें दृढनिश्चय किया कि मुझे इस वक्त जब मेरे माता–पिता को मेरी जरूरत है मैं वापस आऊँगा एवं मुझे इस बात का एहसास होने लगा कि माता–पिता की सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और दुनिया का हर रिश्ता आपका साथ छोड़ सकता है परन्तु माता–पिता अपनी आखिरी सांस तक अपने बच्चों की भलाई के बारे में ही सोचते है।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पोते अनिकेत के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पत्नी मनोरमा श्रीवास्तव के साथ

अतः मैं अपनी स्थाई नौकरी छोड़कर लखनऊ आ गया। इस कार्य में मेरी सहायता मेरे स्वर्गीय शिक्षक प्रो. एस.पी. श्रीवास्तव तथा मेरे आदर्श, मेरे गुरू और कुलपति बलराज चौहान ने की और जिनकी वजह से मैं पिता के अन्तिम दिनों में कुछ सेवा कर पाया। उनका यह ऋण मैं शायद अपने जीवन को न्योछावर कर भी नहीं उतार सकता। फतेहपुर जिले की तहसील बिन्दकी में चूड़मन खेड़ा गाँव पूर्वजों के नाम पर ही था। पापा जी के बाबा का नाम देवी दयाल था। नरेन्द्र कुमार जी के पिता श्री त्रिभुवन नाथ का देहान्त 13 जुलाई, 1971 को हुआ था।

पापा जी की शादी 2 जुलाई 1965 को हुई थी तथा मेरी माता जी मनोरमा श्रीवास्तव पापा जी से बड़े खानदान की थी। माता जी का रंग साफ है जबकि पिता जी साँवले रंग के थे। कभी–2 उनके ससुराल वालों ने उन पर इस बात को लेकर कटाक्ष भी किये पर उन्होंने कभी भी उसका बुरा नहीं माना और अपने मेहनत से आगे बढ़ते रहे। 1971 में उनके पिता त्रिभुवन नाथ की तबियत खराब हो गई उस समय वो गृह विभाग, उ0प्र0 शासन में कार्यरत थे। उन्होंने विभाग के एक मुख्य अग्निशमन अधिकारी को सेवा कार्य सौंप रखा था परन्तु काफी देर हो चुकी थी और उसी वर्ष उनके पिता ने भी प्राण त्याग दिये। उनकी बीमारी में कटघर का मकान भी बिक गया। पापा ने अपने दोनो भाईयों सुरेश (लाल जी) एवं वीरेन्द्र (भईया जी) को आगे बढ़ाने एवं प्रेरित करने का बहुत प्रयास किया परन्तु भाग्य विधाता ने जो लिखा होता है उससे ज्यादा कुछ नहीं होता।

लखनऊ में एक आसरा बनाने की इच्छा से उन्होंने लगभग डेढ़ बिसवा जमीन 25 पैसे प्रति वर्ग फुट की दर से 5.12.1963 को खरीदी। फिर उन्होंने एक कमरा बनवाया और किराये का मकान छोड़कर उसमें आ गये। उस समय वो इलाका जंगल के समान था और दूर–दूर तक कोई घर नहीं था। जेल के पीछे का इलाका होने के कारण भी वहाँ विकास बहुत धीमी गति से हुआ पर वो जगह आज शहर के बीचों बीच है। पापा का कहना था कि घर हमेशा स्टेशन एवं बस स्टाप से पैदल की दूरी पर होना चाहिए। घर को भी उन्होंने बहुत ही योजनाबद्व तरीके से बनवाया। वो स्वयं सामान लाते एवं उस समय सीमेंट का भी कोटा होता था। उन्होंने जब दूसरा कमरा बनवाया तब भी एक ही कमरे में रहे और दूसरा किराये पर उठा दिया और उसके किराये को बचाते रहे। फिर कुछ पैसा इकट्ठा होने पर तीसरा कमरा बनवाया। दो कमरों में स्वयं रहे एवं तीसरा कमरा किराये पर उठा दिया। इस तरह धीरे–2 उन्होंने लगभग 1965 से 1990 के बीच तीन मंजिला घर बनवाया जिसमें आज लगभग 12 कमरे एवं अन्य सुविधायें है। उनका मानना था कि घर हमेशा मुख्य सड़क से थोड़ा अन्दर रहे और घर का निर्माण किले की तरह करना चाहिए तो सुरक्षा की दृष्टि से अच्छा रहता है।

उनके 4 बच्चे थे जिनमें दो लड़के एवं दो लड़कियाँ हैं। मेरे पिता हमेशा से कहते थे कि उन्होंने भगवान से मांगा था कि 4 बच्चे हों जिससे कम से कम एक बच्चा तो पास में रहेगा। उनके सबसे बड़े लड़के का मनीष उससे छोटी लड़की का

नाना स्व. मदन गोपाल श्रीवास्तव, मनीष, वीना श्रीवास्तव (मौसी)
ममता, पिता स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मृदुल श्रीवास्तव श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

नाम ममता, मैं (मृदुल) और सबसे छोटी लड़की का नाम नमिता है। चूंकि उनके पास सीमित संसाधन थे इसलिए बच्चों के जन्म के बाद ही उन्होंने 100 रूपये प्रतिमाह लड़कियों के नाम से और 50 रूपये प्रतिमाह लड़कों के नाम से बचाना शुरू कर दिया था और जो बच्चों की पढ़ाई एवं उनकी शादी ब्याह के खर्चों को करने में बहुत काम आई। उन्हें पढ़ाने का बहुत शौक था। उन्हें जब भी समय मिलता तो अपने बच्चों के साथ–साथ मोहल्ले के अन्य बच्चों को भी पढ़ाते थे। उनका सपना था कि उनके बच्चे बहुत पढ़े परन्तु दुर्भाग्यवश ज्येष्ठ पुत्र मनीष एवं ज्येष्ठ पुत्री ममता ने उतना पढ़ने में रूचि नहीं दिखाई और सिर्फ स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण करके अपनी जीविका चलाने लगे। मुझे पिता के आर्शीवाद से पढ़ने का खूब मौका मिला और मैंने अपनी विधा में अन्तिम डिग्री D-Lit प्राप्त की।

उन्हें शुरू से ही मुझसे खास लगाव था और मुझे उनसे सबसे अधिक मार भी पड़ी। कहते हैं कि पिता की मार में बढ़ा आर्शीवाद छिपा होता है यही कारण है कि आज मैं जो कुछ भी हूँ उसके पीछे उनके दिये गये संस्कार और आर्शीवाद एवं उनका सपना था। वो मुझे एक प्रशासनिक अधिकारी बनाना चाहते थे और उन्होंने हमेशा से ही मुझे प्रशासनिक अधिकारी बनने के लिए प्रेरित किया। परन्तु मेरी रूचि शैक्षिक विद्या की तरफ थी और मैं Academics की तरफ आ गया परन्तु शायद उनका सपना पूरा करने के लिए ही मैं सौभाग्य से प्रशासनिक पद पर ही आ गया और अब मुझे अपना भविष्य भी इसी में दिखाई दे रहा है। बचपन में जब भी पापा टूर पर जाते तो मैं भी उनके साथ जाता था जिस समय पापा जी तराई अनुसूचित जनजाति विकास निगम में थे उस समय उनको एक एम्बेसेडर कार और एक महिन्द्रा जीप मिली हुई थी। उस समय गोण्डा, बहराइच, देवरिया, गोरखपुर जिलों के दौरों पर जाते थे और जंगल के बीच से भी कई बार गुजरना पड़ता था। एक बार उनका सामना डाकुओं से भी हुआ था परन्तु बातचीत करने पर उन्होंने छोड़ दिया। उनकी हिम्मत हमेशा उनके साथ थी इसीलिए वो कभी भी नहीं ड़रते थे। प्रति रविवार शाम को 4 बजे वो तख्त पर बैठ जाते थे और हम सभी की फरमाइशे पूरी करते थे।

उनकी अपनी बहनों ने तो कभी उनको वो प्यार नहीं किया जो एक भाई–बहन के बीच में होता है। उनकी चचेरी बहन विनोद कुमारी और मुँहबोली बहन गीता ने उनकी कलाई में राखी बाँधी और बहनों की कमी महसूस नहीं होने दी।

उनको कभी–कभी गुनगुनाना बहुत अच्छा लगता था। उनके पसन्द के गायक मुकेश और हीरो राजकपूर थे। वो कभी–2 मुकेश का गीत चाँद सी महबूबा हो मेरी कब ऐसा मैंने सोचा था गाते थे और राजकपूर की फिल्में देखना पसन्द करते थे। हीरोइनों में उन्हें नर्गिस और वैजयन्ती माला अच्छी लगती थी।

हम लोगों में संस्कार देने में उनका बड़ा हाथ था। वो कहते थे कि आपसे जो भी बड़ा हो उसको आदर एवं सम्मान दीजिए और छोटो को प्यार देना चाहिए। यही कारण था कि हम जब छोटे थे तो जो घर में ड्राइवर भी आते थे तो हम उनके पैर छूते थे।

पुत्र मनीष श्रीवास्तव एवं पुत्री ममता श्रीवास्तव

उ0प्र0 के मुख्यमंत्री सी.बी. गुप्ता को एक बार अपने छोटे से घर में बुलाने का सौभाग्य उनको प्राप्त हुआ। जब वो तकनीकी शिक्षा विभाग का कार्य देखते थे तो उ0प्र0 के सभी तकनीकी विद्यालयों के निदेशक घर आते थे और बुन्देलखण्ड इंजीनियरिंग संस्थान बनवाने का उनको मौका मिला और उन्होंने लगभग 200 एकड़ की भूमि एवं 90 लाख से ज्यादा की धनराशि दी। इसके पहले निदेशक आर.एस. निर्जर को Appoint करने का भी सौभाग्य मिला। झांसी के इस कालेज के उद्‌घाटन के समय सिर्फ मेरी छोटी बहन नमिता ही इकलौती लड़की present थी तो मंत्री जी ने उद्‌घाटन नमिता से ही करवाया।

विधाता का भी अजीब न्याय है एक समय था कि वो खुद इंजीनियरिंग करना चाहते थे तो उन्हें मौका नहीं मिला और एक समय आज के सभी इंजीनियरिंग कालेजों के प्रधानाचार्यों एवं सभी लोगों को आदेश देने तथा उनको खड़ा करने में बहुत बड़ा योगदान दिया जिसे आज भी वहाँ के लोग याद करते है।

कभी–कभी पिता जी बताते थे कि जब वो गृह विभाग में थे तो उन्होंने मेरठ दंगों को नियंत्रित करने में निर्णायक भूमिका निभाई थी और आई0जी0 जो पुलिस के मुखिया होते थे उनको बहुत मानते थे। उसी समय उनकी प्रतिभा को देखते हुए बाम्बे की एक बड़ी कम्पनी के मालिक ने उन्हें 10 गुना ज्यादा वेतन पर नौकरी देने का आग्रह किया पर उन्होंने मना कर दिया और उनका कहना था कि पैसा कभी मुझे नहीं खरीद सकता और आज जो इतना बड़ा मालिक मुझे सर कहकर सम्बोधित कर रहा है उसकी नौकरी करने पर वो मेरा मालिक हो जायेगा। सरकार में रहकर सेवा करने का नशा उनको बहुत था।

जब वह परिवहन विभाग में थे तो उनकी दोस्ती राजकुमार मित्तल, मुख्य अभियंता और श्री रस्तोगी जी, महाप्रबन्धक, नरायन आटोमोबाइल्स से हुई और कालान्तर में वो लोग अभिन्न मित्र बन गये। यहाँ तक कि मित्तल अंकल के कोई लड़का नहीं था और वो मुझे गोद लेना चाहते थे परन्तु पापा ने उनको मना कर दिया। महिन्द्रा जीप को Taxi एवं Official Vehicle के रूप में introduce कराने में उनका बहुत बड़ा हाथ था।

जिस समय पापा का सेवानिवृत्ति का समय आया उससे लगभग 6 साल पहले उन्होंने आवास एवं नगर विकास का भी कार्यभार देखा। उसी समय उनकी मुलाकात दिल्ली के एक बहुत बड़े घराने सूरी परिवार से हुई और जिनका गाँधी परिवार में अच्छी पकड़ थी। गंगा सागर सूरी जी के दिल्ली के तिलक मार्ग में सूरी अपार्टमेन्ट्‌स का निर्माण कराया। सूरी जी का संजय गाँधी और मेनका गाँधी की शादी कराने में बड़ा हाथ था और वो वहाँ के सबसे अच्छे अपार्टमेन्ट में रहते थे जिसमें पूरी दिल्ली और इंडिया गेट को देखा जा सकता था। मुझे कई बार उनके घर जाने का मौका मिला और उनके घर में चांदी के बर्तनों में वैजयन्ती माला एवं उसके पुत्र के साथ रात्रि भोज करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सूरी अंकल की कम्पनी दिल्ली आटोमोबाइल्स बहुत ही प्रसिद्ध कम्पनी थी।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मृदुल श्रीवास्तव, ममता श्रीवास्तव
नमिता श्रीवास्तव एवं मनोरमा श्रीवास्तव

पुत्र मनीष श्रीवास्तव एवं पुत्री ममता श्रीवास्तव

पापा जी जब भी अपने घर का काम करवाते थे तो एक मंदिर जो घर के पास है उसमें भी निर्माण अवश्य कराते थे। उन दिनों पापा ने एक रईस अंकल का एक काम करवाया था तो उन्होंने पापा से कहा कि मैं आपके लिए कुछ करना चाहता हूँ। उन दिनों वो लाटूश रोड स्थित S.U. Motors के मालिक थे और पापा ने कहा कि आपकी श्रद्धा हो तो जिस मन्दिर का मैं निर्माण करा रहा हूँ उसके चैनल को लगवा दीजिए। उनका बनवाया गया दुःख हरन मन्दिर आज नीलकण्ठ मन्दिर के नाम से जाना जाता है तथा उस मन्दिर में स्थापित हनुमान जी की मूर्ति पापा जी ने अयोध्या से मंगवाई थी और उस मूर्ति की स्थिति इतनी अच्छी है कि हनुमान जी की दृष्टि सदैव हमारे घर में पड़ती रहती है और हमें संकटों से बचाती रहती है। पापा जी कहा करते थे कि यह घर उनका बड़ा बेटा है। हमारे घर में इतने किरायेदार रहे और जिनमें से कुछ बुजुर्ग थे परन्तु उस घर में कभी कोई मृत्यु नहीं हुई और प्रथम मृत्यु हुई थी तो वो मेरे पिता जी स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की जिन्होंने उस घर को अपने खून पसीने से बनवाया था। मुझे उस घर से स्वयं भी दो कारणों से अत्यधिक लगाव है। प्रथम कारण यह है कि मेरे पूज्यनीय पिता ने उसे बनवाया और वहीं अपने प्राण त्यागे तथा दूसरा कारण यह भी है कि यही घर मेरी जन्मभूमि भी है। मैं अब भी अपने उस घर में होता हूँ तो उसकी बिस्तर में सोना और उसी कमरे में रहना पसंद करता हूँ जहाँ मेरे पिता रहा करते थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् मुझे अचानक यह लगने लगा कि मैं 20–30 साल बड़ा हो गया हूँ। मुझे ही सारे घर की जिम्मेदारियाँ सम्भालनी है। मेरी माँ हमेशा मुझे यही कहती हैं कि पापा कहते थे कि मेरे जिन्दा न रहने पर मृदुल ही घर को और तुमको (माँ) को सम्भालेगा। मुझे नहीं लगता कि एक पिता के इस भरोसे और आर्शीवाद से बढ़कर एक पुत्र के लिए कोई गर्व और सम्मान की बात है। किसी भी प्रकार का पुरस्कार इस आर्शीवाद के सामने तुच्छ है और मैं अपने स्व. पिता और ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि मुझे इतनी शक्ति प्रदान करें कि मैं उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतर सकूँ।

उन्होंने अपने कार्यकाल में परिवहन, कृषि, गृह, आवास एवं गृह विभाग, राजस्व, प्राविधिक शिक्षा इत्यादि विभागों का कार्यभार देखा तथा समाज के लिए बहुत कार्य किया। PAC Camps बनवाये। पड़रौना एवं महराजगंज जिलों का निर्माण कराया। उन्हें एक बार तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी के साथ रात्रिभोज करने का भी मौका मिला।

पापा जी की एक आदत ने मुझे बहुत प्रभावित किया। वो रोज शाम को छत में 2–3 घंटे टहलते थे। उस दौरान वो अपने माता पिता को याद करते, अपनी समस्याओं का समाधान करते। अगले दिन के कार्यों की रणनीति बनाते तथा ईश्वर वन्दन करते थे। वह समय को एकदम अकेले बिताते थे और मैं अक्सर उनसे बातें करने के लिए छत पर चला जाता था। हम दोनों घंटों टहलते और बातें करते थे। तो मुझे समझाते थे कि आदमी के अंदर सुहृदयी, आत्मसम्मान, अनुशासन, आत्मविश्वास होना चाहिए औ उनका कहना कि **"हारिये न हिम्मत, बिसारिये न राम"** जीवन में

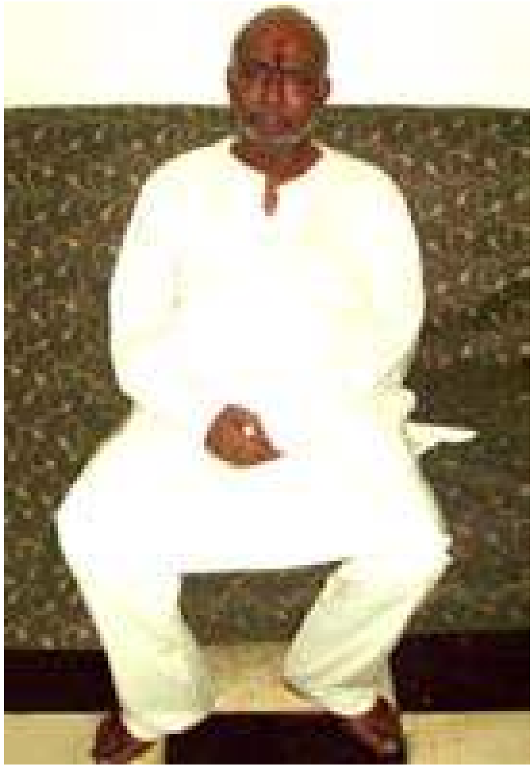

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

पिता

माँ घर का गौरव तो पिता घर का अस्तित्व होते हैं।
माँ के पास अश्रुधारा तो पिता के पास संयम होता है।
दोनों समय का भोजन माँ बनाती है तो जीवन भर भोजन की
व्यवस्था करने वाले पिता को हम सहज ही भूल जाते हैं।
कभी लगी जो ठोकर जो या चोट तो ओ माँ ही मुँह से निकलता है।
लेकिन रास्त पार करते कोई ट्रक पास आकर ब्रेक लगाये तो
बाप रे यही मुँह से निकलता है।
क्योंकि छोटे छोटे संकटों के लिए माँ है पर बड़े
संकट आने पर पिता ही याद आते हैं।
पिता एक वट वृक्ष हैं जिसकी शीतल छाँव में सम्पूर्ण परिवार सुख से रहता है।

समस्याओं से लड़ने और उनको जीतने का मूल मंत्र है।

नरेन्द्र कुमार जी को शुरू से ही साहित्य में विशेष रूचि थी। वो कहानियाँ लिखते थे जो उस समय की प्रसिद्ध पत्रिकाओं, धर्मयुग, साप्ताहिक कहानियाँ जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई। वे बताते थे कि **"एक पैसे से व्यापार"** उनकी प्रथम कहानी थी। उस कहानी के कुछ दृष्टांत इस प्रकार है :–

"एक छोटा सा अबोध बालक था उसके पास जीविकोपार्जन का कोई साधन नहीं था और जब वो थक जाता था तो वो गाँव के लोग उसे खाना दे देते थे पर उसे हमेशा यह लगता था कि जिन्दगी में आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान से बढ़कर कुछ नहीं है। जंगल में लोग लकड़ी काटने जाते थे और गर्मी के कारण वो लोग अत्यधिक थक जाते थे। इस बालक ने कुछ दिनों तक देखा कि लोग जंगल में जाते हैं और इतनी मेहनत करने के बाद लौटते हैं तो बहुत प्यासे रहते हैं। तभी उस बालक के मन में आया कि क्यों न व्यापार किया जाये जिससे अपना पेट तो भर सके। उसने एक पैसे से एक घड़ा खरीदा और उसमें ठंडा पानी भरा और जब गाँव वाले लकड़ी काटकर वापस आते तो वो उनको ठंडा पानी पिलाता था और गाँव वाले कुछ आने उसे दे देते थे। उस अनाथ बालक ने भीख माँगने के बजाय मेहनत से पैसे कमाकर पेट भरना ज्यादा उचित समझा। फिर उस बालक ने पानी के साथ–साथ चने रखना भी शुरू कर दिया। राहगीर व गाँव वाले उसके पास रूकते, पेड़ के नीचे आराम करते, पानी पीते और चने खाकर चले जाते। बदले में उस बालक को जो पैसे मिलते वो उनको जमा करता और एक दिन वह बच्चा बहुत बड़ा आदमी बन जाता है।"

शायद इसी कहानी ने उनको बहुत प्रभावित किया था तभी उनको मेहनत करके पैसा कमाने और खुद्दारी से जीवन व्यतीत करने की लगन थी। उन्हें पैसे की कीमत मालूम थी तभी वे एक–एक पैसे को जोड़ते रहे और जीवन भर अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते रहे। वह अपनी तुलना उस अनाथ बालक से करते थे जिसने संघर्ष करके अपना जीवन बनाया। पापा जी जब सेवानिवृत्त हुए तब उन्हें थोड़ा सा फन्ड मिला और पेंशन मिलनी थी। उस समय बहुत से लोगों ने उनको राय दी कि पैसे को लगाकार कोई व्यापार कर लें या कुछ और करें पर उनका मानना था कि व्यापार पैसे से नहीं दिमाग से होता है।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् उन्होंने Tax coordinator नाम का एक संस्था का निर्माण किया जिसमें वह सिर्फ 150 रू में लोगों को आयकर सम्बन्धी सुझाव देते थे तथा घर से ही कागज लेकर लोगों का आयकर रिर्टन भरवाते थे। इस प्रकार से वो अपना समय भी व्यतीत कर लेते थे और धीरे–धीरे उनके पास लगभग 800 Clients भी हो गये थै। उनसे जुड़े कुछ लोगों में शरद, धनंजय, जो investment से सम्बन्धित कार्य करते थे उन्हें पिता जी के माध्यम से बहुत काम मिला। उनके परम मित्रों में जे. पी. श्रीवास्तव जी, जवाहर लाल जी, के.एन. श्रीवास्तव, अनूप श्रीवास्तव, आर.एस. जिर्जर, अश्विनी भार्गव, महेन्द्र कुदेशिया, अजीत कुमार साहू, दीक्षित जी, राजकुमार मित्तल, रस्तोगी जी थे। हमारे कुछ मित्र अविनाश, संदीप, अमित, दीपू इत्यादि उनके

पत्नी मनोरमा श्रीवास्तव एवं पुत्री ममता श्रीवास्तव

बहुत करीब थे औ वो घंटों उनसे बात करके उन्हें जीवन जीने के गुण सिखाते थे।

वो अपना काम खुद करना पंसद करते थे और इतना बीमार होने पर भी उन्हें आखिरी दिन तक स्वयं ही कार्य किया। पापा को मेरे ऊपर बहुत विश्वास था और उन्होंने स्वयं कष्ट में रहकर भी हमें सी.एम.एस. जैसे मंहगे स्कूल में पढ़ाया। जब मेरी हाईस्कूल की परीक्षा थी उससे 1 महीने पहले मुझे टाईफाइड का बुखार हो गया और स्कूल वालों में मुझे बोर्ड की परीक्षा में बैठाने से मना कर दिया। फिर पिता जी ने अपने source से मुझे स्कूल से अनुमति दिलवा दी। उन्होंने मेरे लिए जल निगम की कार का इंतजाम भी करवा दिया और मुझे परीक्षा के दौरान ग्लूकोज भी पिलाया जाता था।

जब मेरा हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा का परिणाम आना था तो उस समय मैं अपने ननिहाल दिल्ली में था। जिस दिन परिणाम आया उस दिन उन्होंने अखबार में तृतीय श्रेणी में मेरा रोल नम्बर देखना आरम्भ किया। फिर जब उन्हें मेरा नम्बर नहीं मिला तो उन्हें लगा कि मैं फेल हो गया हूँ क्योंकि मेरी तैयारी नहीं थी। फिर जब उन्होंने देखा तो उन्हें मेरा नम्बर प्रथम श्रेणी में मिला। फिर भी उन्हें डर लग रहा था कि सिर्फ 60 प्रतिशत के आस–पास अंक होंगे और स्कूल वाले नाराज होंगे। पर जिस दिन वो मेरी अंक तालिका लेने स्कूल गये तो 81.2 प्रतिशत अंक देखकर आश्चर्य में पड़ गये और मेरे Merits में आने से सिर्फ 13 अंक कम थे। उस दिन से पापा को लगा कि मेरे अन्दर एक सफल व्यक्ति बनने के गुण है और आज मैं जो कुछ भी हूँ उसके पीछे मेरे पापा नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मेरे गुरू प्रोफेसर एस.पी. श्रीवास्तव, मेरे अभिभावक समान प्रोफेसर बलराज चौहान एवं प्रो. ए.एन. सिंह का बहुत बड़ा हाथ है।

सन् 1994 में ुझे यह लगाकि मुझे परास्नातक की पढ़ाई करने हेतु विदेश में दाखिला लेने का प्रयास करना चाहिए। मैंनेउस दिशा में प्रयास भी किये और मुझे युनाइटेड किंगडम के कुछ विश्वविद्यालयों में दाखिला भी मिल गया जिनमें लंदन की कार्डिफ विश्वविद्यालय प्रमुख है। मुझे छात्रवृत्ति मिलने की भी संभावना थी जिसके लिए मुझे दाखिला लेने के उपरान्त लंदन में एक परीक्षा देनी थी। परास्नातक की पढ़ाई हेतु उस समय लगभग 8 लाख का खर्च था। मैं जानता था कि मेरे पिता के पास इतना पैसा नहीं है परन्तु जब मैंने उनसे पूछा कि मुझे जाना चाहिए कि नहीं तो उन्होंने कहाकि में तुम्हें घर बेचकर पढ़ाई के लिए पैसे दे सकता हूँ परन्तु तुमने यह सोचा है कि तुम्हारे तीन भाई–बहन और भी हैं जिनका भविष्य दाँव पर लग सकता है। यदि पढ़ाई खत्म होने के उपरान्त तुमको अच्छी नौकरी न मिल पाई तो क्या होगा ? चूँकि उन्होंने बचपन से ही इस तरह की समस्याएं देखी थीं इसलिए वो आशंकित थे। उसी समय मैंने निर्णय लिया कि मैं अपने भाई–बहनों एवं परिवार के भविष्य की कीमत पर विदेश नहीं जाऊँगा और ईश्वर ने यदि चाहा तो मैं अपने कार्यों द्वारा विदेश यात्रा करूँगा। ईश्वर ने मेरी इच्छा पूरी की और मुझे एक बार विदेश में नौकरी मिली तथा अभी तक 2–3 बार विदेश यात्रा करने का मौका मिला। यह सब उस महान पिता के आर्शीवाद का ही फल है।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

ससुर स्व. मदन गोपाल श्रीवास्तव

पिता जी को 2007 में Paralysis का attack पड़ा और उनके बाए अंग की तरफ उसका प्रभाव था जिसकी वजह से उनका बिस्तर तक से उठना बैठना मुश्किल हो गया था परन्तु उनके अन्दर इतनी आत्मशक्ति थी कि उस स्थिति में भी वो निर्भर नहीं रहना चाहते थे। मैंने उनसे कहा कि अब आपको मैं भोपाल ले चलूँगा तो इस डर कि वजह से कि उनको अपना घर छोड़कर भोपाल जाना पड़ेगा उन्होंने अपना खूब ख्याल रखा और एक महीने के अन्दर उनकी तबियत में इतना सुधार हो गया कि वो स्वयं अपना कार्य करने लगे। परन्तु उनकी आँखों की रोशनी चली गई। 2007 से ही उनके जीवन की दिनचर्या बदल गई। उन्हें इतना पढ़ने लिखने का शौक था परन्तु आँखों की रोशनी धुंधली हो जाने पर भी वो अखबार की Headline पढ़ना नहीं भूलते थे। हम लोग जब भी पास में बैठते तो वो अपने बचपन की, अपने संघर्ष की, अपने माता–पिता की बातें बताया करते थे और जीवन के मूल्यों से परिचित कराते। उनकी बातें आत्मसात् करने का मुझे सौभाग्य मिला और अपने जीवन के हर क्षण में मैं उनको और उनकी शिक्षा को याद करता हूँ और उनके बताये हुए रास्ते पर ही चलने का प्रयास करता हूँ और मुझे ऐसा महसूस होता है कि उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी आत्मा मेरे शरीर में निवास करती है और तब मैं अपना हर कार्य उनको समर्पित करके ही करता हूँ।

जून 2009 में पापा जी को फिर एक बार Paralysis का attack पड़ा वो अपने कपड़े उतार कर फेंकने लगे और उनकी आवाज़ चली गई। मैं अपने मित्र निखिल मौर्य एवं राजेश साहनी के साथ Dinner पर गया था और उसी समय घर से फोन आया कि पापा की तबियत बहुत खराब है। जैसे ही मैं घर आया और उनकी स्थिति देखी तो लगा कि अब वो शायद नहीं बचेंगे। हम लोग तुरन्त उनको अवध अस्पताल ले गयें जहाँ डाक्टरों को लगा कि सोडियम पोटेशियम की कमी है और जब उनका CT Scan कराया गया तो Paralytic attack confirm हो गया। मैंने तुरन्त निर्णय लिया कि उनको डा0 अतुल रस्तोगी को दिखाऊँगा और उन्हें निशात अस्पताल में भर्ती करा दिया। डा0 अतुल रस्तोगी जी का इलाज इतना सटीक और अच्छा था कि दो दिन के भीतर ही उनकी आवाज़ भी वापस आ गई और वो ठीक हो गये। जिस दिन वो ठीक हो गये उसी रात को मैं अस्पताल में उनके कमरे के बाहर बैठा था उन्होंने मेरे बड़े भाई मनीष से मुझे अन्दर बुलवाया और डाँटने लगे कि तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे अस्पताल में भर्ती कराने की। मुझे कुछ नहीं हुआ है और तुरन्त वापस ले चलो। मुझे उस समय तो बहुत बुरा लगा परन्तु जब वह वापस आ गये तो एक दिन मुझे समझाने लगे कि मैं चाहता हूँ कि मेरी मृत्यु मेरे अपने घर में हो और यदि मैं बीमार पड़ जाऊँ तब भी तुम मुझे अस्पताल में भर्ती मत कराना। मैंने तिनका–तिनका करके थोड़ा सा पैसा जोड़ा है जो मेरे परिवार, पोते, पोतियों के भविष्य के लिए है और अगर मुझे अस्पताल में भर्ती करा दिया तो सारा पैसा खत्म हो जायेगा और मेरी इच्छा है कि मैं अपने परिवार और उसकी पीढ़ी के लिए रोटी, कपड़ा और मकान का इंतजाम कर जाऊँ। जो आर्थिक परेशानियाँ उन्हें बचपन से झेलनी पड़ी वो उनके परिवार को न

नरायन आटोमोबाइल के महाप्रबन्धक रस्तोगी जी के साथ स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

पत्नी मनोरमा श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

झेलनी पड़े इसलिए उन्होंने ऐसा किया। उनका कहना था कि दरिद्रता अभिशाप है और इंसान को इतनी मेहनत करनी चाहिए कि दरिद्रता को दूर करके एक सीधा साधा जीवन व्यतीत कर सके।

5 जुलाई 2009 को हमने उनका 73वाँ जन्मदिन मनाया। यह दिन हमारे लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण था क्योंकि एक ज्योतिषी ने पापा जी को बताया था कि यदि वह अपने जीवन का 73वाँ वर्ष पार कर लेंगे तो वह लगभग 15 वर्ष का जीवन और जियेंगे। जब जून 2009 को Attack के बाद उनको जीवनदान मिला तो मुझे विश्वास हो गया कि अब पापा जी कुछ समय तक और जिन्दा रहेंगे और उस दिन हमने केक मंगवाया, पापा जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में पहली बार केक काटा और मुझे गले से लगाया। वह क्षण बहुत ही भावुक क्षण थे और हमें तनिक भी एहसास नहीं था कि यह उनके जीवन का अन्तिम जन्मदिन हम लोग मना रहे है।

सितम्बर 2009 में मुझे बैंकाक जाना था तो उस दिन पापा जी ने पूछा कि तुम्हें कुछ पैसे तो नहीं चाहिए। मैंने पापा से कहाकि सब कुछ आपका ही दिया तो है। जब मैं बैंकाक में था उन दिनों कुछ रिश्तेदार आये और उन्होंने पापा जी से गलत तरीके से बात की और धमकाया भी। इस सदमें से उन्हें लगा कि आज मैं लाचार हो गया हूँ तो इन लोगों की इतनी हिम्मत कि मुझसे तेज आवाज़ में बात करे सके। जब मैं बैंकाक से लौटकर आया तो भी उन्होंने मुझे नहीं बताया।

28 सितम्बर 2009 के आस पास उन्होंने मुझे 50,000 रूपये दिये और कहा कि घर बहुत गन्दा हो गया है तुम घर की पुताई करवा दो। 2 अक्टूबर 2009 को मैं करीब 15000 रूपये का पुताई का सामान लेकर आ गया था। उस दिन जब शाम को मैं और पापा जी जब बात करे रहे थे उन्होंने मुझे वह घटना और अपनी एक दो परेशानियाँ बताई। उन्होंने मुझे Financial Planning करने की भी सलाह दी । तब मैंने पापा जी से कहा भी कि अभी क्या जल्दी है फिर कभी साथ में बैठेंगे तब आपसे सीख लूँगा। फिर उस दिन मैं उनकी दवाईया, च्वयनप्राश, इत्यादि लेने चला गया। रात में देर से लौटने पर मेरी पापा जी मुलाकात नहीं हो पायी और मैं ऊपर सोने चला गया।

3 अक्टूबर 2009 को सुबह 4:30 बजे के करीब वह उठकर बाथरूम गये और पोते अनिकेत को जगाया कि तुम पढ़ो और उससे कहा कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है और चाहे मुझे कुछ भी हो जाये पर तुम Exam देने जरूर जाना। फिर उसके बाद वह बिस्तर पर लेट गये और फिर कभी नहीं उठे। सुबह 6 बजे के करीब वह अपने प्राण त्याग चुके थे। दौड़कर अनिकेत ने मुझे बुलाया और कहा कि बाबा उठ नहीं रहे हैं और मैं जैसे ही नीचे आया तो मुझे आभास हो गया कि उन्होंने प्राण त्याग दिये है। चूंकि वह पहले बीमारी के कारण बेहोश हो जाते थे तो मैंने मोहल्ले के डाक्टरों से कहा कि कृपया एक बार देख लीजिए परन्तु सबने कुछ न कुछ बहाना बना कर घर आने से इन्कार कर दिया। फिर मैंने आफिस से एम्बुलेन्स मंगवाई और उनको पास के एक नर्सिंग हो में ले गया जहाँ डाक्टर ने बता दिया कि उनका देहान्त हो गया है।

स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपने सहयोगी
अनूप श्रीवास्तव (उप सचिव उ0प्र0 शासन) के साथ

घर में पूजा का एक दृश्य

हम उनके मृत शरीर को घर ले आये और सभी रिश्तेदारों को दिल्ली, इलाहाबाद, झांसी और लखनऊ में सूचित किया। चूँकि हिन्दू धर्म की रीतियों के अनुसार पिता की चिता को ज्येष्ठ पुत्र ही आग देता है तो हमें उनका इंतजार तो करना ही था। मैंने जैसे ही आफिस में सूचना दी वैसे ही बलराज चौहान सर घर आये और मुझे हिम्मत दी। उन्होंने मुझे इतनी अच्छी तरह समझाया और शक्ति दी कि मैं छोटा होते हुए भी पिताजी के अन्तिम संस्कार के इंतजाम को हिम्मत से कर सका।

सभी दोस्तों एवं रिश्तेदारों को सूचित करने के बाद जब मैं अन्तिम संस्कार एवं पूजा पाठ के सामान के लिए पैसे देने लगा तो मुझे उस समय रोना आ गया और तुरन्त मन में ख्याल आया कि मेरे पिता इतना स्वाभिमानी थे कि अपने अन्तिम संस्कार के लिए वो मुझे पैसे दे गये थे। पुताई के लिए जो 50,000 रूपये उन्होंने मुझे दिये थे उसमें से 35,000 तो बचे ही थे और वहीं उनके अन्तिम संस्कार के लिए पर्याप्त थे। अगले दिन 4 अक्टूबर 2009 को जब सभी लोग एकत्र हो गये तो जब हम उनकी अर्थी को लेकर बैकुण्ठ धाम जाने लगे उस समय बहुत बरसात हुई और हम लोग भीगते हुए उनके मृत शरीर को बैकुण्ठ धाम ले गये। ऐसा लग रहा था कि मानों उनकी मृत्यु पर परमात्मा भी आँसुओं से उनका स्वर्ग में स्वागत कर रहे हों। जैसे ही हम लोग उनकी अर्थी को लेकर बैकुण्ठ धाम पहुँचे, बरसात बन्द हो गई और हमने हिन्दू रीति रिवाज से उनका अंतिम संस्कार कर दिया।

अगले दिन हमें उनकी अस्थियाँ लेकर इलाहाबाद संगम जाना था। हम लोग जब संगम पहुँचे, तो मुझे ऐसा लगा कि पापा जी मुझे बता रहे हैं कि मेरा बचपन संगम तट पर बीता और आज मेरी अस्थियाँ उसी संगम में विसर्जित की जा रही है। जब मैंने गंगा जी में उनकी अस्थियाँ विसर्जित कर रहा था उसी समय मैंने प्रण लिया कि मैं अब आगे का जीवन मैं उनकी के बताये रास्ते पर चलूँगा और जीवन की बड़ी से बड़ी परेशानियों का सामना हिम्मत से करूँगा। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं जब भी उनसे कहता था कि आप चिंता मत किया करिये आपकी तबियत ठीक नहीं रहती आप केवल अपना ध्यान रखा कीजिए। तो वो मुझसे कहते थे कि मैं घर का मुखिया हूँ और मैं सबकी चिन्ता नहीं करूँगा तो और कौन करेगा। आज स्वार्थ की इस दुनिया में कोई अपने बारे में न सोचकर सबके बारे में सोचे तो इससे बड़ा आदर्श क्या होगा ? वह जब भी हमसे नाराज होते तो अत्यन्त ही सम्मानसूचक शब्दों जैसे महानुभाव, महाशय का उपयोग करते थे और हम समझ जाते थे कि पापा जी कुछ नाराज है।

उनकी एक आदत थी कि वो किसी की भी बुराई पीठ पीछे नहीं करते थे। एकदम खरा–खरा बोलना फिर चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा। पहले मुझे यह बुरा लगता था पर आज मुझे लगता है कि दिल का साफ होना और खरा बोलना एक बहुत ही अच्छी आदत है और इससे जो भी लोग आपके साथ जुड़ते हैं। उनकी यह शिक्षा भी मुझे प्रेरणा देती है कि **"नेकी कर दरिया में डाल"**। मैंने भी जीवन में अब एक उसूल बनाया है कि अपनी क्षमतानुसार सभी की मदद करूँगा और एक स्वाभिमान एवं सम्मान के साथ जीवन जीते हुए मृत्यु को प्राप्त करूँगा।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

श्री अश्विनी कुमार भार्गव

परम मित्र अश्विनी भार्गव के संस्मरण

श्री अश्विनी भार्गव अपनी और पिता जी की दोस्ती के बारे में बताने लगे तो उन्होंने बताया कि मेरे पिताजी नरेन्द्र (रामू) 45 कोठा पार्चा, इलाहाबाद में प्रथम तल पर रहते थे। उनके घर के नीचे एक श्री पाठक जी थे और और वो 9th Class में फेल हो गये। अश्विनी जी, पाठक जी के पास अक्सर जाते थे जहाँ पर उनकी मुलाकात मेरे पिता जी से हुई।

बचपन से ही पिताजी 2 ट्यूशन 30 रूपये प्रतिमाह की पढ़ाते थे जिसमें उन्हें सभी विषय पढ़ाने पड़ते थे। उन्हें गणित विषय में अत्यन्त रूचि थी और घर की छत के ऊपर टीन के नीचे वो पढ़ाते थे। उन्होंने ऊपर ही पानी पीने के लिए एक घड़ा रखा हुआ था और वो लोग 1 आने के गुड़ के सेव लेकर आते थे। उसको वो लोग खाते और पढ़ते थे। शुरू से ही पिताजी जुझारू प्रकृति के व्यक्ति थे।

रात के 9:30 बजे पिताजी अपने एक मित्र दिनेश के साथ अश्विनी जी के घर पहुँचते थे और उनसे कहते थे कि पढ़ रहे हो देखते हैं कैसे Exam पास कर पाओगे। वो तीनों मित्र रात में 10 बजे रामबाग, इलाहाबाद के हनुमान मन्दिर में जाते थे और प्रसाद खाने के पश्चाते सामने के स्टेशन के सामने स्थित एक पंजाबी का होटल था जिसमें वो लोग चाय पीते थे। उस समय एक चाय एक आने की मिलती थी और वो लोग 3 आने बारी–बारी से खर्च करते थे और उसके पश्चात् घर आकर 2 बजे रात तक पढ़ाई करते थे।

घर के पास में ही एक ईदगाह था जहाँ वो लोग क्रिकेट खेलते थे। शाम को वो लोग 5 stone क्रिकेट या फुटबाल खेलने के लिए अवश्य मिलते थे। पिताजी बालिंग बहुत अच्छी करते थे। 1960 में अश्विनी भार्गव लखनऊ में गये और 1961 में पिता जी ने लखनऊ आकर सचिवालय सेवा join कर ली। उन्होंने 30 रूपये प्रतिमाह के किराये पर एक कमरा ले लिया। अश्विनी जी और पिताजी उस समय 22 रूपये प्रतिमाह के कूपन खरीदकर मिश्रा भोजनालय में खाना खाते थे।

दिनेश जी एवं मुरारी मोहन राय 1963 में सचिवालय सेवा में चयनित हो गये और वो लोग पिताजी के साथ उसी कमरे में रहने लगे। उसी के पश्चात् पिताजी ने एक Plot 500 रूपये में जेल रोड पर खरीदा उस समय दोनो लोग साइकिल से ही दफ्तर जाते थे और पिताजी की प्रथम Posting गृह विभाग में हुई। दोपहर को 1–1:30 बजे के बीच दोनों लोग साथ में Lunch करते थे तथा चाय पीने के लिए हजरतगंज का एक चक्कर लगाते थे। दोनो लोग हमेशा से ही sharing करके ही पैसा खर्च करते थे। शाम को नरही, हजरतगंज, लखनऊ के एक होटल में अश्वनी भार्गव, पापा जी, दिनेश जी एवं मुरारी मोहन राय सभी लोग साथ में साग खाते थे। पापा जी जब भी अमीनाबाद जाते भार्गव अंकल से जरूर मिलते थे। वह हमेशा से ही काम में बहुत sincere थे।

इलाहाबाद में इतवार को संगम जाकर जलेबी खाते थे। पापा जी अपने सभी शिक्षकों में से जी.के. मजूमदार जो कि CMP Degree College में अंग्रजी पढ़ाते थे की बहुत इज्जत करते थे।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव का परिवार

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

पत्नी श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

ज्येष्ठ पुत्र मनीष श्रीवास्तव

ज्येष्ठ पुत्री ममता श्रीवास्तव

कनिष्ठ पुत्र मृदुल श्रीवास्तव

कनिष्ठ पुत्री नमिता श्रीवास्तव

परिवारिक वृक्ष

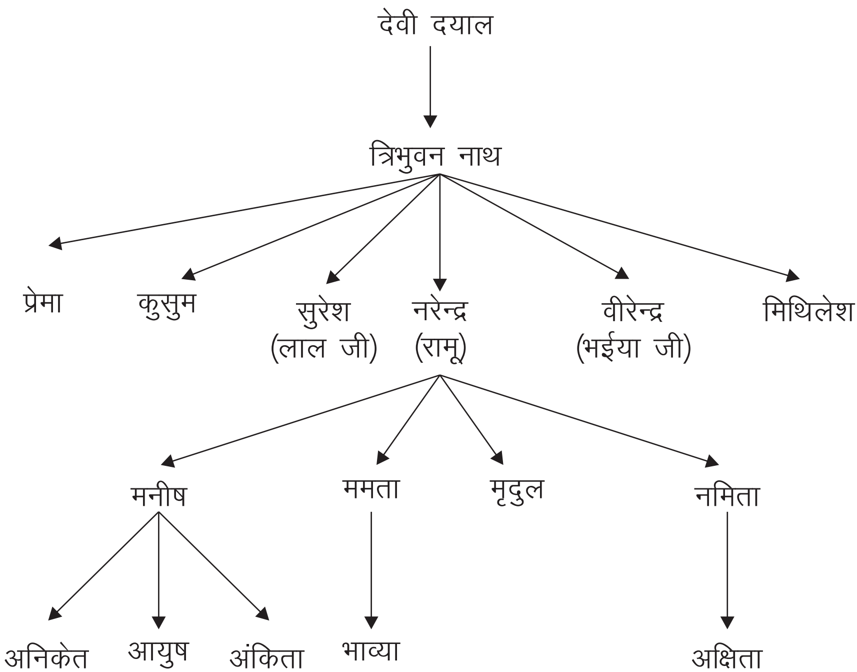
देवी दयाल
त्रिभुवन नाथ
प्रेमा
कुसुम
सुरेश (लाल जी)
नरेन्द्र (रामू)
वीरेन्द्र (भईया जी)
मिथिलेश
मनीष
ममता
मृदुल
नमिता
अनिकेत
आयुष
अंकिता
भाव्या
अक्षिता

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव बड़ी पुत्री ममता का विवाह सम्पन्न कराते हुए

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, पुत्र मनीष एवं पुत्री नमिता व अन्य के साथ

Late Narendra Kumar Srivastava

Career Journey

Name	:	**Narendra Kumar Srivastava**
Address	:	568/9, Kailashpuri, P.O.- Alambagh, Lucknow-226005
Phone	:	0522-451006
Date of Birth	:	31^{st} July, 1937
Date of Retirement	:	31^{st} July 1995
Education	:	B.Sc. (P.C.M.) 1960 from University of Allahabad.
Experiences	:	Above 40 years Service, Under Govt. of U.P. Details of Position held are noted below:

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मनोरमा श्रीवास्तव, प्रभा श्रीवास्तव एवं
विजय विक्रम श्रीवास्तव (तेज)

इलाहाबाद के परिवार के सदस्यगण

S. No.	Name of the offices	Name of the Post held	Period	Brief resume of work and performance
1.	U.P. Civil Secretariat, Lucknow	Joint Secretary to The Govt of U.P. Revenue Deptt. & Ex officio Dy. Custodian of Enemy Property in U.P. & Director, U.P. Police Housing Corporation Deputy Secretary, The Govt. of U.P. (i) Revenue Deptt.	29.06.93 to 31.07.95 21.07.92 to 28.06.93	Besides routine matters controlled and supervised establishment of about 150 persons of the revenue department of Secretariat: Supervised proposal Kisan Bahi Yojana, Reorganisation of Lekhpal, Halkas, Creation of New Districts and Tahesil administered, property under Govt. estate relief and rehabilitative and enemy property, Budget and other policy matters of the Governance, Constructive activities of the revenue department costing over 05 crore of every year
		(ii) Housing Deptt.	04.09.89 to 20.07.92	Master plans of towns housing scheme of the U.P. Housing Board/ Development Authorities, Land Acquisition, Cases, Land use establishment, cases under RBO Act.
		Under Secretary, The Govt. of U.P. (i) Housing Deptt. (ii) Technical Education was associated with establishment	 21.07.89 to 03.09.89 04.11.86 to 20.07.89	Processed matters relating to the Technical Education in Uttar Pradesh namely Rorkee University and other Engineering Colleges, Sanctioned grant and approved R&D Schemes and established Bundelkhand Institute of Engineering and Technology, Jhansi and Institute of Engineering of Lucknow

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पोते अनिकेत के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मनीष श्रीवास्तव एवं श्री के.एन. सिन्हा (गन्नी)

2	Section Officer	(i). Agriculture Deptt.	24.02.75 to 28.02.78	Processed Schemes relating to production of cereals, all seat, vegetables and fruits. Separate Directorate horticulture and fruit utilization established a number of Potato farms established in growing areas, District Horticulture offices were setup. Besides strengthening of agriculture University Pant Nagar to more Agriculture University of Faizabad and Kanpur were established, administrated matters relating to U.P. Agro also.
		(ii) Transport Deptt.	22.07.80 to 20.07.86	Processed proposal covering the entire organisation of U.P.S.R.T.C. and Transport organisation. Inter-State Transport acquaintance and matter relating to implementations of Motor Vehicle Act/ Rules/ Passenger Tax and U.P. Goods Act.
		(iii) Revenue Deptt.	21.07.86 to 03.11.86	Supervise matters relating to Gram Sabha, Wards distribution of Land among landless and problems relation to possession.
	Tarai Anusuchit Janjati Vikas Nigam Ltd. Lucknow	Administrative Officer (On Deputation basis)	01.03.78 to 21.07.80	Established office Tarai Scratch, Toured Tribal areas, Formulated and implemented various Socio-economic schemes and complied and obligations under the Company Law.

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव मित्र आशा भार्गव एवं उनके पति के साथ

शिक्षा विभाग के निदेशक शरदेन्दु, गिरीश श्रीवास्तव (सब रजिस्ट्रार) एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

	U.P. Civil Secretariat	Upper Division Assistant, Home Deptt. (Police) (Selected on his basis of Competitive Examination Conducted by U.P. Public Service Commission in 1961 and stood 13th in order of merit	10.07.62 to 23.02.75	Processed matter under Police Act Police Regulations and office manual for superintendents, processed sanctioned of construction schemes relating to police station/ Out post Police/ PAC Lines, Staff Quarters etc. Huge construction activity was started and land was acquired for the purpose
	Examiner, Local Fund Audit, U.P. Allahabad	Assistant Auditor (Selected on the basis of Competitive Exam conducted by U.P.P.S.C. stood 2nd in order of merit	02.05.60 to 19.04.61 & 01.09.61 to 09.07.62	Audited Account to Nagar Palika Hardoi and Town, District Board and Education Institutions of District Hardoi, Saharanpur and Bareilly
	U.P. Universities Enquiry Commission, Allahabad	Assistant Auditor (on deputation)	20.04.61 to 31.08.61	Associated with the Examination of Financial Position of Lucknow and Gorakhpur Universities and Sankrit Vishvidhalaya, Varanasi. Assisted in the draft of reports and recommendations.
	Collectrate Allahabad	Clerk	26.05.55 to 30.04.60	was posted in general office and in the court of SDO, Sirathoo, Allahabad took extensive touring of villages to assist in the inspection of progress of various development scheme by the S.D.O. Also assisted in inspection of Department of Tehsil and Police stations falling under the juridiction of sub division. Processed Criminal and revenue cases and handled correspondence.

After retirements, He was engaged in the Socio-economic development of Tehsil Bindki district Fatehpur and Tahsil Malihabad District Lucknow. Have and aptitude for Rural Development works.

दामाद मुकेश श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

अनिकेत श्रीवास्तव एवं मनोरमा श्रीवास्तव

स्मृति पत्र

संस्था का नाम : स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव फाउन्डेशन

संस्था का पूरा पता : 568/9 कैलाशपुरी, आलमबाग, लखनऊ – 226 005

संस्था का कार्यक्षेत्र : सम्पूर्ण भारत

संस्था के उद्देश्य :

1. समाज में महिलाओं के उत्थान, उनके सशक्तीकरण, उद्यमिता विकास को बढ़ावा देने के लिये प्रयास करना।
2. बच्चों की शिक्षा एवं पुष्टाहार इत्यादि के बारे में जानकारी प्रदान करना।
3. शिक्षा के व्यापक प्रचार एवं प्रसार द्वारा समाज के सभी वर्गों को शिक्षा के महत्व के बारे में बताना।
4. भारतीय ग्रामीण एवं शहरी परिप्रेक्ष्य में पीने योग्य जल के प्रबन्ध एवं महत्ता का विवेचन करना।
5. चिकित्सा क्षेत्र में सर्वसुलभ, सर्वग्राह्य, गुणवत्तायुक्त, चिकित्सा सुविधाओं का उपयोग कराने का प्रयास करना।
6. ग्रामीण स्तर के सुधार हेतु, पर्यावरण तथा भूमि विकास कार्यक्रमों को चलाना जिससे समाज को स्वामित्व प्रदान किया जा सके।
7. विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों, गोष्ठियों, सेमिनार इत्यादि का आयोजन करना।
8. समाज के गरीब वर्गों के उत्थान एवं विकास हेतु प्रयास करना।
9. भारत के जनजीवन, लोकाचार और लोक व्यवहार में निहित एकत्व का विभिन्न सन्दर्भों एवं परिप्रेक्ष्यों में विवेचन एवं समर्थन।
10. भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों पर आधारित प्राचीन जीवन पद्धति और आज की जीवन पद्धति का समाज शास्त्रीय अध्ययन एवं विश्लेषण।
11. भारत की प्राचीन सभ्यता के मूल तत्वों का आज की सापेक्षता में विवेचन।
12. शिक्षा के पत्राचार माध्यम से लोगों की अधिक से अधिक भागीदारी बढ़ाना।
13. मानवाधिकार क्षेत्र में जागरूक भूमिका निभाना।

दादी एवं परपोता अनिकेत

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव साले विजय विक्रम के साथ

14. समाज में अपराध कम करने हेतु व्यापक कदम उठाना।

15. पर्यावरण संरक्षण एवं एच0 आई0 वी0 के क्षेत्र मे कार्य करना।

16. **(क) शोध** –

- शोध इकाई की स्थापना करना।
- शोध पत्रिका की निःशुल्क प्रकाशन।
- शोध पूरक सेमिनार और कार्यशालाओं का आयोजन।

(ख) साहित्य –

- अनुवाद पद्धति द्वारा लोगों तक ज्ञान पहुँचाना।
- गोष्ठियों का आयोजन।
- शोध पत्रों का निःशुल्क प्रकाशन।
- स्मान प्रवृत्तियों का विश्लेषण।

(ग) कला –

- चित्र प्रदर्शनी का आयोजन।
- गोष्ठियों का आयोजन तथा नवीनतम प्रकार के कला माध्यम से शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार।

(घ) प्रकाशन –

- विभिन्न विषयों पर पढ़े गये शोध पत्रों का निःशुल्क प्रकाशन।
- शोध संस्थान की वार्षिक पत्रिका का निःशुल्क प्रकाशन।

(ड़) व्याख्यान माला – सम्बन्धित विषय पर व्याख्यान माला का आयोजन।

(ट) दृश्य माध्यम – वीडियो कैसेट तैयार करके बहुत से विषयों पर दृश्य, वाच्य और श्रव्य माध्यम द्वारा विषय का विवेचन, विश्लेषण।

17. इन सभी उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु लगन के साथ कार्य करना।

18. संस्था के प्रबन्धकारिणी समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के नाम, पते, पद तथा व्यवसाय जिनकी संस्था के इस स्मृति–पत्र तथा नियमों के अनुसार संस्था का कार्यभार सौंपा गया।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव भतीजे श्री के.एन. सिन्हा (गन्नी) के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

क्र0 सं0	नाम / पिता / पति का नाम	पता	पद	व्यवसाय
1	डा0 (श्रीमती) विनोद कुमारी श्रीवास्तव पुत्री स्व0 श्री श्याम बिहारी सिंह	11 / 191, इन्दिरा नगर लखनऊ	अध्यक्ष	चिकित्सक
2	श्रीमती कविता रश्मि, पत्नी श्री अजय कुमार सिंह	डी–2 / 394 सेक्टर– डी एल डी ए कालोनी कानपुर रोड, लखनऊ	उपाध्यक्ष	गृहणी
3	डा0 मृदुल श्रीवास्तव, पुत्र स्व0 श्री एन0 के0 श्रीवास्तव	568 / 9 कैलाशपुरी, आलमबाग, लखनऊ	सचिव	नौकरी
4	श्रीमती अनीता सिंह श्रीवास्तव, पुत्री श्री सर्वजीत सिहं	58 अ, रानोपाली, अयोध्या, फैजाबाद	कोषाध्यक्ष	समाज सेवा
5	श्री निखिल मौर्य, पुत्र श्री एम0 के0 मौर्य	3, बिहारी पार्क जजेस लेन सरस्वती पुरम, रायबरेली रोड, लखनऊ	सदस्य	बिजनेस
6	श्री देश दीपक सिंह, पुत्र श्री सन्तराम	568 / 283, कैलाशपुरी, आलमबाग, लखनऊ	सदस्य	वकील
7	श्री मिथलेश मिश्रा, पुत्र श्री डी0 एन0 मिश्रा	568 / 139 ख गीतापल्ली आलमबाग, लखनऊ	सदस्य	नौकरी

हम निम्न हस्ताक्षरकर्ता उपरोक्त स्मृति पत्र एवं नियमावली के अनसार सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 की धारा 21 के अन्तर्गत पंजीकृत कराना चाहते हैं।

ज्येष्ठ पुत्री ममता के तिलकोत्सव में रिश्तेदारों एवं मित्रों के साथ

साली श्रीमती सुमित्रा श्रीवास्तव (बिट्टी) एवं पुत्री ममता श्रीवास्तव

स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव फॉउन्डेशन

समाज सेवा तथा शिक्षण कार्य के प्रचार प्रसार एवं संवर्धन हेतु संस्थान

नियमावली

1.	संस्था का नाम	–	स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव फॉउन्डेशन
2.	संस्था का पंजीकृत पता	–	568/9, कैलाशपुरी, आलमबाग, लखनऊ।
3.	संस्था का कार्यक्षेत्र	–	सम्पूर्ण भारतवर्ष
4.	संस्था के उद्‌देश्य	–	स्मृति पत्र
5.	**सदस्यता**		–

(1) **संस्थापक सदस्य** – संस्था को गठित करने में जिन व्यक्तियों ने सहयोग किया है तथा जिनके नाम स्मृति पत्र में अंकित है वे संस्था के संस्थापक सदस्य होंगे। इनके लिये सदस्यता शुल्क रु0 2001/– होगा। इनकी सदस्यता आजीवन होगी।

(2) **आजीवन सदस्य** – जो व्यक्ति इस संस्था के उद्‌देश्य में आस्था एवं विश्वास रखते हों तथा नियमावली के पालन हेतु वचनबद्ध हों, अध्यक्ष/सचिव के नाम प्रार्थना–पत्र देकर सदस्यता हेतु आवेदन देने के प्श्चात अनुमोदन प्राप्त होने पर उसी वर्ब का सदस्य बनाया जा सकेगा जिस वर्ग के लिये अनुमोदन किया गया हो।

(3) **सामान्य सदस्य** – जो व्यक्ति संस्था को रु0 11/– (रुपये ग्यारह मात्र) सलाना देंगे वे संस्था के सामान्य सदस्य होंगे परन्तु प्रतिबन्ध यह होगा कि सचिव का प्रस्ताव और अध्यक्ष का अनुमोदन आवश्यक होगा।

(4) **सम्मानित सदस्य** – शोध, साहित्य, कला, संस्कृति, दर्शन, स्थापत्य इत्यादि के क्षेत्र में विशेष योगदान करने वाले व्यक्तियों को सम्मानित सदस्य के रूप में सचिव के प्रस्ताव पर अध्यक्ष द्वारा नामित किया जा सकेगा। यह सदस्य सदस्यता शुल्क से मुक्त रहेंगे तथा इनको मत देने का अधिकारी नहीं होगा।

(5) **अनुदाता सदस्य** – संस्थान को अनुदान स्वरूप रु0 2,000/– (रुपये दो हजार मात्र) या इससे अधिक धनराशि देने वाला व्यक्ति संस्था का अनुदाता सदस्य अध्यक्ष द्वारा नामित किया जा सकेगा। ऐसे विशिष्ट जन संस्था के आयोजनों में माननीय अतिथि के रूप में आमंत्रित किये जायेंगे परन्तु उनको मत देने का अधिकार नहीं होगा।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव मित्रों एवं मेरे (मृदुल) साथ

चचेरे भाई गिरीश श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
एवं मित्र श्री डी.पी. दीक्षित

(6) **निगमित सदस्य** – समान उद्देश्यों की किसी भी संस्था को अध्यक्ष संस्था का निगमित सदस्य नामित कर सकेगा। ऐसी संस्था को रु0 250/– (रुपये दो सौ पचास मात्र) वार्षिक शुल्क देना होगा। ऐसी संस्था का विधिवत प्रतिनिधि बैठकों में पर्यवेक्षक के रूप में आमंत्रित किया जायेगा, परन्तु उसको मत देने का अधिकार नहीं होगा।

6. **सदस्यता की समाप्ति** – निम्न कारणों से किसी सदस्य की सदस्यता समाप्त हो जायेगी।

- पागल हो जाने पर।
- मृत्यु हो जाने पर।
- संस्था विरोधी कार्य करने पर।
- न्यायालय द्वारा दण्डित होने पर।
- त्यागपत्र देने पर।
- सदस्यता शुल्क न देने पर।

7. **संस्था के अंग**

- साधारण सभा
- प्रबन्धकारिणी समिति

साधारण सभा –

गठन – साधारण सभा का गठन मताधिकार वाले सभी प्रकार के सदस्यों को मिलाकर किया जायेगा।

बैठकें – साधारण सभा की सामान्य बैठक वर्ष में एक बार होगी। विशेष परिस्थितियों में आपाल कालीन बैठक कभी भी बुलायी जा सकती है।

सूचना अवधि – सामान्य बैठक की सूचना कम से कम 30 दिन पूर्व तथा विशेष आकस्मिक बैठक की सूचना 10 दिन पूर्व दी जायेगी।

गणपूर्ति – साधारण सभा की सामान्य बैठकों में कोरम कुल संख्या के 1/3 सदस्यों की उपस्थिति मान्य होगी।

वार्षिक अधिवेशन की तिथि – साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन वर्ष में एक बार होगा, जिसकी तिथि प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा तय की जायेगी।

साधारण सभा के कर्तव्य एवं अधिकार –

- प्रबन्धकारिणी समिति का चुनाव कराना।
- संस्था का वार्षिक बजट पास कराना।

पोते अनिकेत के साथ स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

ज्येष्ठ पुत्री ममता श्रीवास्तव के विवाह कराते हुए स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

- संस्था की वार्षिक रिपोर्ट तैयार कराना।
- संस्था के संविधान में संशोधन करना।
- संस्था के उन्नति एवं विकास में रचनात्मक सहयोग प्रदान करना।

प्रबन्धकारिणी समिति –

गठन – प्रबन्धकारिणी समिति का गठन साधारण सभा द्वारा चुनाव पद्धति से किया जायेगा। प्रबन्धकारिणी समिति में निम्न पदाधिकारी एवं सदस्य होंगे।

- अध्यक्ष – एक
- उपाध्यक्ष – एक
- सचिव / निदेशक – एक
- सदस्य सचिव – एक
- कोषाध्यक्ष – एक
- सचिव (प्रचार एवं प्रकाशन) – एक
- सदस्य – एक

प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्यों की कुल संख्या 7 होगी। भविष्य में संख्या बढ़ने की संभावना है।

बैठकें – प्रबन्धकारिणी समिति की सामान्य बैठक वर्ष में 3 बार प्रत्येक चार माह में एक बार होगी। आवश्यकता पड़ने पर विशेष बैठक कभी भी बुलायी जा सकती है।

गणपूर्ति – प्रबन्धकारिणी समिति की बैठकों का कोरम कुल सदस्यों की संख्या के 1/3 सदस्यों की उपस्थिति में मान्य होगा। स्थगित बैठक के लिये पुनः कोरम की आवश्यकता नहीं होगी।

सूचना अवधि – सामान्य बैठकों की सूचना 20 दिना पूर्व तथा विशेष बैठक की सूचना 10 दिन पूर्व दी जायेगी।

रिक्त स्थानों की पूर्ति – प्रबन्धकारिणी समिति में आकस्मिक रूप से हुये रिक्त पद पर नियुक्ति सचिव के प्रस्ताव पर अध्यक्ष द्वारा साधारण सभा के सदस्यों से की जायेगी।

कार्यकाल – प्रथम प्रबनधकारिणी समिति का कार्यकाल 7 वर्ष होगा। तत्पश्चात् प्रबन्धकारिणी समिति का कार्यकाल 3 वर्ष होगा।

अधिकार एवं कर्तव्य – संस्था का समस्त प्रबन्ध प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा किया जायेगा।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव परिवार के सदस्यों के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव कुछ रिश्तेदारों के साथ

पदाधिकारियों के कर्तव्य एवं अधिकार –

1. अध्यक्ष

- अध्यक्ष संस्था का प्रमुख होगा।
- अध्यक्ष संस्था की साधाराण सभा एवं प्रबन्धकारिणी समिति की बैठकों की अध्यक्षता करेगा।
- अध्यक्ष संस्था के कार्यक्रमों के प्रभारी कार्यान्वयन के लिये सचिव के परामर्श से उपसमितियों का गठन करेगा। उद्देश्य प्राप्ति एवं सुचारू रूप से कार्य संचालन के लिये उपाध्यक्षों में अध्यक्ष द्वारा नामित कोई एक उपाध्यक्ष किसी एक उप समिति का अध्यक्ष होगा और वह संस्था के अध्यक्ष के मार्गदर्शन में अपनी उपसमिति के लिये निर्धारित संगठन संचालन एवं कार्यपालन करेगा।
- मत विभाजन के अवसर पर समान मत होने पर अपना निर्णायक मत देगा।
- अध्यक्ष देश के विभिन्न प्रदेशों, राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों के लिये सचिव के परामर्श से संस्था के संयोजक मनोनीत करेगा। यह संयोजक अपने अध्यक्ष द्वारा निर्धारित स्वरूप के अनुसार प्रदेशों की समिति गठित करके अध्यक्ष का अनुमोदन प्राप्त करेगा।
- अध्यक्ष शोध, इतिहास, साहित्य, कला, संस्कृति दर्शन इत्यादि के क्षेत्र में सुविख्यात व्यक्तियों को सम्मानित सदस्य के रूप में नामित करेगा।
- अपने पद पर आजीवन कार्य करेगा।
- संस्था के अन्य पदाधिकारियों के कर्तव्य, अधिकार एवं कार्यक्षेत्र का निर्धारण आवश्यकतानुसार सचिव के प्रस्ताव पर करेगा।

2. उपाध्यक्ष

- उपाध्यक्ष अध्यक्ष द्वारा स्वीकृत एवं प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करेंगे।

3. सचिव / निदेशक

- सचिव संस्था का मुख्य अधिशासी अधिकारी होगा। यह साधारण सभा, प्रबन्धकारिणी समिति एवं अध्यक्ष द्वारा निर्धारित संस्था की नीतियों एवं कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिये पूर्णतया उत्तरदायी होगा।
- वह संस्था की प्रादेशिक एवं अन्य शाखाओं के साथ समन्वित सम्बन्ध सुनिश्चित करेगा और इस सम्बन्ध में वांछित वित्तीय एवं प्रशासनिक अधिकारों का प्रयोग करेगा।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पोते अनिकेत एवं अपने सहयोगियों श्री अनूप श्रीवास्तव (उप सचिव उ0प्र0 शासन) एवं श्री जवाहर लाल (उप सचिव, उ0प्र0 शासन) के साथ

श्री गंगा सागर सूरी, श्री गिरीश श्रीवास्तव, स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं श्री अमर

- संस्था के वार्षिक अधिवेशन में वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।
- अध्यक्ष के अनुमोदन से समस्त बैठकों की तारीख तय करेगा, बैठक बुलायेगा, कार्यवाही आदि लिखेगा तथा संस्था के अभिलेखों को अपनी सुरक्षा में रखेगा।
- सदस्य बनने वाले व्यक्तियों के सदस्यता फार्म पर विचार करने के पश्चात् उसे अनुमोदन हेतु प्रबन्ध समिति की स्वीकृति के लिये प्रस्तुत करेगा।
- संस्था विरोधी कार्य करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध निष्कासन की कार्यवाही करेगा तथा अध्यक्ष की आज्ञा से उसके अनुमोदन हेतु प्रबन्ध समिति के सम्मुख रखेगा।
- सरकारी, अर्द्धसरकारी, कार्यालयों, विभागों प्रतिष्ठान आदि से अनुदान हेतु सम्पर्क करेगा।
- सदस्यता शुल्क, दान, अनुदान, ऋण आदि संस्था की ओर से प्राप्त करेगा।
- कर्मचारियों की नियुक्ति, पदोन्नति, निष्कासन अनुशासन तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारों का प्रयोग करेगा।
- संस्था की ओर से समस्त दस्तावेजों, बैनामों आदि पर हस्ताक्षर करेगा तथा चल–अचल सम्पत्ति प्राप्त करेगा।
- समिति द्वारा लिये गये निर्णयों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करेगा।
- संस्था की ओर से तथा संस्था के विरुद्ध किये गये मुकदमों की पैरवी करेगा। यथावश्यकता वह इस प्रयोजन के लये किसी सचिव को नामित कर सकेगा।
- अपने पद पर आजीवन कार्य करेगा।

4 सचिव (प्रचार एवं प्रकाशन) –

संस्था के उद्देश्यों, कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों का विभिन्न प्रचार माध्यमों से प्रचार एवं प्रसार के अतिरिक्त ऐसे अधिकारों का प्रयोग एवं कर्तव्यों का निर्वाहन करेगा जो अध्यक्ष एवं सचिव द्वारा निर्दिष्ट होंगे। संस्था के सम्पूर्ण साहित्य के नियोजन, प्रकाशन, मुद्रण एवं प्रसारण की व्यवस्था करेगा।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पुत्र मनीष के साथ पूजा करते हुए

चचेरे भाई गिरीश श्रीवास्तव एवं मित्र अजमत अली के साथ
स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

5 कोषाध्यक्ष –

- सचिव/निदेशक के साथ संयुक्त हस्ताक्षर से खाते का संचालन करेगा।
- कोषाध्यक्ष संस्था के कोष एवं हिसाब–किताब के लिये पूरी तरह जिम्मेदार होगा।
- कोषाध्यक्ष संस्था की बैलेन्सशीट तैयार करवायेगा और यथा नियम उसका ऑडिट करवाकर प्रबन्धकारिणी समिति एवं साधारण सभा के समक्ष प्रस्तुत करेगा।
- अध्यक्ष एवं सचिव के मार्गदर्शन में आगामी वर्ष का बजट प्रबन्धकारिणी के अनुमोदन के लिये प्रस्तुत करेगा।

8. संस्था का कोष – संस्था का कोष किसी मान्यता प्राप्त बैंक में रखा जायेगा जिसका संचालन सचिव/निदेशक एवं कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर से होगा।

9. संस्था के नियमों का संशोधन – संस्था के नियमों, उद्देश्यों में परिवर्तन साधारण सभा की बैठक में कुल सदस्यों के बहुमत द्वारा किया जा सकेगा।

10. अदालती कार्यवाही का संचालन – संस्था सम्बन्धी अदालती कार्यवाही का संचालन सचिव/निदेशक अथवा उसके द्वारा नामित व्यक्ति द्वारा किया जायेगा। संस्था से सम्बन्धित वाद लखनऊ में ही दायर किये जा सकेंगे।

11. संस्था के अभिलेख – संस्था के निम्न अभिलेखों का रख–रखाव करेगी :

- कार्यवाही रजिस्टर
- एजेण्डा रजिस्टर
- स्टॉफ रजिस्टर
- कैशबुक रजिस्टर
- सदस्यता रजिस्टर

12. संस्था का विघटन – यदि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से संस्था विघटित हो जाती है तो विघटित सम्पत्ति के निस्तारण की कार्यवाही सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट की धारा–13 व 14 के अन्तर्गत की जायेगी।

स्थान – लखनऊ

दिनाँक

(सत्य प्रतिलिपि)

ज्येष्ठ दामाद मुकेश श्रीवास्तव एवं अन्य मित्रों के साथ स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

परम मित्र आर.के. मित्तल (मुख्य अभियन्ता) परिवहन निगम अपनी पत्नी के साथ

कैलाशपुरी स्थित दुःख हरन मन्दिर जिसका निर्माण स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने कराया था

साले विजय विक्रम (तेज) एवं पत्नी मनोरमा श्रीवास्तव के साथ स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

परम मित्र श्री जे.पी. श्रीवास्तव, पोते अनिकेत एवं सबसे प्रिय चचेरे भाई
स्व. अशोक कुमार राय के साथ स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

संख्या- 3174/16-14-[illegible]-1-407/79

प्रेषक,

श्री नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव,
अनुसचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

(1) प्रधानाचार्य,
[illegible] इंजीनियरिंग कालेज, इलाहाबाद।
(2) प्रधानाचार्य,
मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर।
(3) प्रधानाचार्य,
राजकीय [illegible], लखनऊ।
(4) प्रधानाचार्य,
राजकीय [illegible], कानपुर।
(5) प्रधानाचार्य,
[illegible] इंजीनियरिंग कालेज, [illegible]।
(6) निदेशक,
[illegible] टेक्नोलॉजी, [illegible]।
(7) निदेशक,
एच०बी०टी०आई०, कानपुर।
(8) निदेशक,
[illegible], लखनऊ।
(9) रजिस्ट्रार,
[illegible]।
(10) डीन,
[illegible], [illegible]।
(11) कुलपति,
रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की।

प्राविधिक शिक्षा अनुभाग-1 लखनऊ: दिनांक [illegible] जनवरी, 1980

विषय:- [illegible] के पद पर अतिरिक्त [illegible] हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक [illegible] की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करते हुए मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि [illegible] की [illegible] का [illegible]-

(1) [illegible] लागू करने की तिथि अर्थात 1-1-1973 से पूर्व [illegible] हैं।

(2) [illegible] हैं।

भवदीय

हमारी दादी, ताई जी एवं किरन ताई जी व अन्य

दादी, पोता एवं दामाद मुकेश श्रीवास्तव

[illegible]

प्रेषक,

[illegible]

सेवा में,

[illegible]

[illegible]

महोदय,

[illegible]

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं स्व. ओ.एन. श्रीवास्तव

पीयूष, विनय, स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मुन्ना एवं अनमोल

संख्या 7443 पत्रावली संख्या 1-162739 दिनांक 18-10-2010

सोसाइटी – रजिस्ट्रीकरण
का
प्रमाण – पत्र
(अधिनियम संख्या 21, 1860 के अधीन)

संख्या 1880-2010-2011

एतद्द्वारा प्रमाणित किया जाता है कि स्व0 नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

फाउण्डेशन

988/8, [illegible] आलमबाग, लखनऊ।

जो आज उत्तर प्रदेश में अपनी प्रवृत्ति के संबंध में यथासंशोधित सोसाइटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम, 1860 ई0 के अधीन सम्यक् रूप से रजिस्ट्रीकृत किया गया है।

यह प्रमाण-पत्र 17/10/2015 तक विधिमान्य होगा।

आज दिनांक 18/10/2010 को मेरे हस्ताक्षर से दिया गया।

सोसाइटी के रजिस्ट्रार,
उत्तर प्रदेश।

दादी व अन्य

सुरेश कुमार श्रीवास्तव, पोता अनिकेत एवं चाची

स्व. विद्यावती श्रीवास्तव

घर में पूजा का एक दृश्य

भाई सुरेश कुमार श्रीवास्तव, अनिकेत, नमिता एवं दादी

पत्नी मनोरमा श्रीवास्तव

ज्येष्ठ पुत्र मनीष श्रीवास्तव

नानी प्रभा श्रीवास्तव, दादी एवं श्री विजय विक्रम श्रीवास्तव (मामा)

दादी परिवार के अन्य सदस्यों के साथ

पत्नी मनोरमा श्रीवास्व एवं बहु सुमन श्रीवास्तव

श्री विजय विक्रम श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

अनुपमा, नीलम एवं ममता श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव तथा अन्य रिश्तेदार

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव श्री विजय विक्रम श्रीवास्तव (तेज) के साथ

नमिता श्रीवास्तव, दादी, अनिकेत एवं मनीष श्रीवास्तव

दादी एवं ममता श्रीवास्तव

पत्नी मनोरमा श्रीवास्तव एवं पुत्री ममता श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ज्येष्ठ पुत्री ममता श्रीवास्तव का विवाह सम्पन्न कराते हुए

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव पोते अनिकेत के साथ

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव परिवार के अन्य सदस्यों के साथ

श्रीमती एच.एम. श्रीवास्तव एवं श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

ज्येष्ठ पुत्री ममता श्रीवास्तव की विदाई

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

होली के अवसर पर परिवार के सदस्य

स्व. सूरज प्रसाद श्रीवास्तव एवं श्रीमती सुचित्रा श्रीवास्तव (बिट्टी) मौसी

बहन डा0 विनोद कुमारी श्रीवास्तव

श्रीमती बीना श्रीवास्तव एवं श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

बहन डा0 विनोद कुमारी श्रीवास्तव

बहन मिथिलेश श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

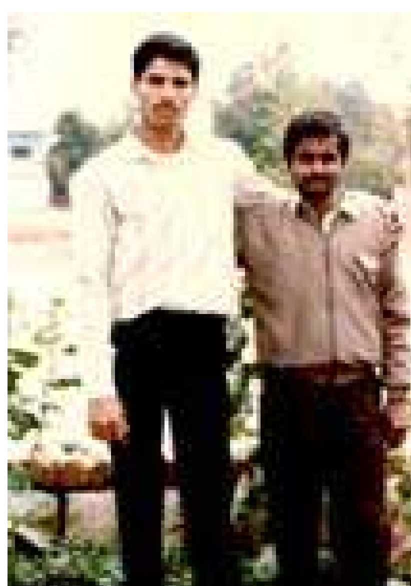

मनीष श्रीवास्तव अपने मित्र के साथ

पुत्र मनीष श्रीवास्तव

भाजें – (पीयूष श्रीवास्तव एवं विनय श्रीवास्तव)

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

अपने 73वें (अन्तिम जन्मदिन) 5 जुलाई, 2009 के दिन स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

मनीष श्रीवास्तव

सुमन श्रीवास्तव

अनिकेत

अंकिता

आयुष

अपने 73वें (अन्तिम जन्मदिन) 5 जुलाई, 2009 के दिन स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

अपने 73वें (अन्तिम जन्मदिन) 5 जुलाई, 2009 के दिन स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

अपने 73वें (अन्तिम जन्मदिन) 5 जुलाई, 2009 के दिन स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

अपने 73वें (अन्तिम जन्मदिन) 5 जुलाई, 2009 के दिन स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

अपने 73वें (अन्तिम जन्मदिन) 5 जुलाई, 2009 के दिन स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

अपने 73वें (अन्तिम जन्मदिन) 5 जुलाई, 2009 के दिन स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अन्तिम जन्मदिन 5 जुलाई, 2009 को जीवन का पहला केक काटते हुए

अपने 73वें (अन्तिम जन्मदिन) 5 जुलाई, 2009 के दिन स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

नातिन अक्षिता श्रीवास्तव

मनीष, स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, एवं मृदुल श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पोते आमुष के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपने अन्तिम जन्मदिन 5 जुलाई, 2009 को

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. प्रो. एस.पी. श्रीवास्तव एवं श्रीमती एस.पी. श्रीवास्तव
के साथ मृदुल श्रीवास्तव

अपने गुरू, अभिभावक और प्रेरणास्रोत श्री बलराज चौहान के साथ
डॉ. मृदुल श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपने परम मित्र श्री जे.पी. श्रीवास्तव के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, पोते अनिकेत अपने परम मित्र
श्री जे.पी. श्रीवास्तव के साथ

परम मित्र अश्विनी भार्गव

ननकऊ मामा

ननकऊ मामा अपने परिवार के साथ

ननकऊ मामा

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपने रिश्तेदारों के साथ

मृदुल श्रीवास्तव माँ मनोरमा श्रीवास्तव के साथ

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं श्रीमती प्रभा श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, दामाद मुकेश श्रीवास्तव एवं अन्य

पत्नी श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव एवं बहन डा. विनोद कुमारी श्रीवास्तव

छोटे दामाद प्रभात, अन्य भाईयों एवं रिश्तेदारों के साथ

बहन गीता श्रीवास्तव

श्री अश्विनी कुमार भार्गव अपनी पत्नी के साथ

सुश्री आद्या श्रीवास्तव

मृदुल श्रीवास्तव मौसी वीना श्रीवास्तव के साथ

श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

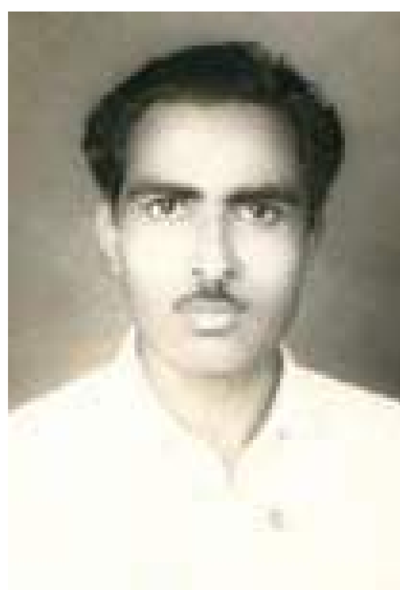

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती सरोजनी श्रीवास्तव (माता – मुकेश श्रीवास्तव)

नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपने प्रिय पोते अनिकेत के साथ

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं स्व. अशोक श्रीवास्तव

स्व. श्रीमती सरोजनी श्रीवास्तव, श्रीमती के.एन. श्रीवास्तव

श्रीमती किरन श्रीवास्तव, श्रीमती मिथिलेश श्रीवास्तव

श्रीमती ममता श्रीवास्तव, श्रीमती सुमन श्रीवास्तव एवं श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव

डा. विनोद कुमारी श्रीवास्तव, मृदुल श्रीवास्तव, अनिकेत श्रीवास्तव,
श्रीमती अशोक चन्द्र राय, श्रीमती नमिता श्रीवास्तव

मुकेश श्रीवास्तव, श्रीमती आशा भार्गव, श्री मनीष श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

श्री मनीष श्रीवास्तव, श्री विजय विक्रम श्रीवास्तव (तेज), स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मृदुल एवं श्री के. एन. सिन्हा (गन्नी)

श्री अजीत कुमार, श्री मिथिलेश मिश्रा एवं श्री बबलू

श्री राजबहादुर सिंह, सुश्री कविता रश्मि, मृदुल, मनीष एवं
स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं मृदुल श्रीवास्तव

मृदुल श्रीवास्तव एवं स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव, नमिता, ममता एवं मृदुल

श्री मिथिलेश मिश्रा एवं श्री मधुकर विश्वकर्मा

मृदुल श्रीवास्तव, स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों के साथ

नमिता, अपने ससुर, चाचा स्व. अशोक चन्द्र राय, अनिकेत एवं मृदुल

डॉ. मृदुल श्रीवास्तव श्री एम.एस. रामानुजम के साथ

प्रो. ए.एन. सिंह एवं डॉ. मृदुल श्रीवास्तव

लेखक : डा. मृदुल श्रीवास्तव

स्व. एन.के. श्रीवास्तव फाउण्डेशन की भविष्य की योजनाएँ वर्ष 2012

- ❖ शिक्षा के क्षेत्र में विकास का प्रयास करना।
- ❖ सामाजिक उत्थान से सम्बन्धित शोध कार्यं
- ❖ स्वास्थ्य सम्बन्धी हेल्थ कैम्प लगवाना।

स्व. नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव